गुलिवर की यात्राएं

रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

बौनों के देश में

मेरे पिता इंग्लैंड के नोटिंघमशायर नामक नगर में एक छोटे-से ज़मींदार थे। हम पांच भाई थे। उनमें से मैं तीसरा था। चौदह साल की उम्र में मैं केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में पढ़ने गया। तीन साल तक मैं मन लगाकर वहां पढ़ता रहा। लेकिन मेरे पिता अधिक दिनों तक मेरी पढ़ाई का खर्च नहीं उठा सके, इसलिए मुझे पढ़ाई छोड़कर लन्दन चला जाना पड़ा। वहां मैंने डाक्टरी का काम शुरू किया।

मैं अपना दवाखाना चलाता था। लेकिन काफी दिनों तक मुझे सफलता नहीं मिली। इसलिए मैंने एक जहाज़ पर डाक्टरी की नौकरी कर ली। दो-चार बार विदेश-यात्रा करने के बाद मैं फिर से लन्दन लौट आया। इस बार शुरू में मेरा काम खूब चला, लेकिन फिर बाद में मन्दा पड़ने लगा। मैंने फिर से जहाज़ पर नौकरी करने का निश्चय किया। इसके बाद छः साल तक मैं दो जहाज़ों पर डाक्टर का काम करता रहा। मैंने लम्बी-लम्बी यात्राएं कीं और काफी धन भी इकट्ठा किया।

लेकिन मेरी आखिरी यात्रा बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण रही। मैं 'एण्टी-लोप' नामक जहाज़ पर डाक्टर था। हम लोगों ने 4 मई, सन् 1699 को ब्रिस्टल से यात्रा शुरू की। आरम्भ में हमारे दिन बड़े मज़े से बीते। लेकिन एक बार जब हम दक्षिण सागर से पूर्वी द्वीप-समूह की ओर जा रहे थे तो रास्ते में हमारा जहाज़ एक तूफान का शिकार हो गया। हम रास्ता भूल गए। कई दिनों तक

इधर-उधर भटकते रहे। यहां तक कि भोजन-सामग्री समाप्त हो गई। लोग भूखे रहने लगे। भूख और कड़ी मेहनत के कारण हमारे बारह आदमी मर गए। बाकी जो बचे उनकी हालत भी बहुत खराब थी।

कहावत है कि मुसीबत जब आती है तो चारों तरफ से आती है। 5 नवम्बर को हमारा जहाज़ समुद्र में निकली हुई एक चट्टान से टकरा गया। लेकिन जहाज़ टूटकर दो टुकड़े हो, इससे पहले ही किसी तरह मैं अपने छः साथियों के साथ एक छोटी-सी नाव में निकल भागा। हमारे देखते-देखते जहाज़ डूब गया। अब समुद्र की तूफानी लहरें थीं और हमारी छोटी-सी नाव।

थोड़ी ही देर में हम लोग थक गए। नाव को हमने लहरों और हवा की मर्ज़ी पर छोड़ दिया। अचानक फिर तूफान आया और हमारी नाव भी उलट गई। उसके बाद मुझे पता नहीं कि मेरे साथियों का क्या हुआ, वे सभी डूब गए या मेरी तरह कोई बचा भी। मेरा ख्याल है कि शायद मेरे सिवा कोई नहीं बचा।

मैं तैरते-तैरते बुरी तरह थक गया। लेकिन फिर भी मैंने अपने को डूबने नहीं दिया। अन्त में किसी तरह मैं किनारे लगा। जब मैं गिरता-पड़ता सूखी ज़मीन तक पहुंचा, तब रात के लगभग आठ बजे थे। मैं बुरी तरह थका हुआ था। अन्त में एक जगह लेट गया। लेटते ही मुझे नींद आ गई। ऐसी गहरी नींद मुझे अपनी ज़िन्दगी में कभी भी नहीं आई थी। जब मेरी नींद खुली तब दिन निकल आया था।

मैंने उठने की कोशिश की, लेकिन मैं हिल नहीं सका। मैं पीठ के बल लेटा था। पता नहीं किसने रात में मेरे हाथ-पैर कसकर ज़मीन पर बांध दिए थे! मेरे लम्बे और घने बालों को भी इसी तरह ज़मीन से कस दिया था। मेरा पूरा शरीर पतले-पतले, लेकिन पक्के डोरों से कसा हुआ था। मैं इधर-उधर ग

भी नहीं हिला सकता था। बस, सिर्फ आसमान की ओर ही देख सकता था। सूरज सिर पर चमकने लगा। धूप से मेरी आंखें दुखने लगीं। मुझे अपने कानों के पास कुछ शोर सुनाई देता था, लेकिन मैं सिवा आसमान के और कुछ नहीं देख पा रहा था।

थोड़ी देर में मुझे लगा कि मेरे बायें पैर पर कोई चीज़ चल रही है। धीरे-धीरे वह चीज़ मेरी छाती पर चढ़ आई। बड़ी मुश्किल से कोशिश करके मैंने गर्दन सिकोड़कर उसे देखने की कोशिश की तो मैं हैरत में रह गया। मैंने देखा कि वह बहुत ही छोटा-सा आदमी था। उसकी लम्बाई मुश्किल से छः इंच होगी। हाथ में तीर-कमान लिए वह मेरी छाती पर खड़ा था।

इतने में वैसे ही करीब चालीस आदमी उसके पीछे-पीछे मुझ-पर चढ़ आए। मुझे बड़ा **आश्चर्य हो रहा था**। मैं कुछ ज़ोर से दहाड़ा तो वे सब डरकर वहां से भाग गए। इस भगदड़ में उनमें से कई एक को चोट भी आई। लेकिन दूसरी बार फिर वे लोग आगे बढ़े और मेरा चेहरा ठीक से देखने की कोशिश करने लगे। उनमें से एक काफी आगे बढ़ आया। जब उसने अच्छी तरह से मेरा चेहरा देख लिया, तो हाथ उठाकर वह एक अजीब भाषा में चीखा। मेरी समझ में कुछ नहीं आया।

इतनी देर तक मैं चुपचाप पड़ा रहा। लेकिन अन्त में किसी तरह कोशिश करके मैंने बहुत-से धागे तोड़ डाले और अपना बायां हाथ छुड़ा लिया, फिर दो-एक झटके देकर मैंने अपने सिर के बन्धनों को भी ढीला कर दिया। अब मैं अपना सिर थोड़ा-सा हिला सकता था।

जब मैंने उन विचित्र प्राणियों को पकड़ने की कोशिश की वे चीखते-चिल्लाते दूर भाग गए। थोड़ी देर बाद उन्होंने बायें हाथ पर तीरों की वर्षा कर दी। उनके तीर सुई की तरह मेरे हाथ में चुभने लगे।

मैं मारे दर्द के कराहने लगा। मैंने अपने को आज़ाद करने

की कोशिश की, तो फिर से वे तीर बरसाने लगे। इस बार उनमें से कुछ लोग छोटे-छोटे भाले लेकर मेरे शरीर में चुभाने लगे। लेकिन सौभाग्य से मैं चमड़े का कोट पहने था, इसलिए मुझे विशेष चोट नहीं आई।

अन्त में मैंने सोचा कि मुझे इस समय चुपचाप ही पड़े रहना चाहिए, रात को किसी तरह मैं अपने को छुड़ा लूंगा। मुझे उनसे कोई विशेष डर नहीं था। मैंने सोचा कि इन लोगों की लम्बाई इतनी ही है, तो अगर ये बहुत बड़ी फौज लेकर आएं तब भी मेरा कुछ नहीं कर सकते।

लेकिन उन लोगों की इच्छा कुछ और ही थी। धीरे-धीरे उनकी भीड़ बढ़ती गई। मुझसे कोई चार गज की दूरी पर उन्होंने एक ऊंचा-सा मंच बनाया। इसपर एक आदमी चढ़ गया। फिर उन लोगों ने मेरे सिर की बाईं तरफ की रस्सियां ढीली कर दीं। अब मैं आसानी से गर्दन घुमाकर उस आदमी को देख सकता था। वह देखने में उनके सरदार जैसा मालूम पड़ता था। मंच पर उसके साथ उसके दो-चार सिपाही और नौकर-चाकर भी खड़े थे, जिनकी लम्बाई मेरी उंगली के बराबर थी। वह उन सबमें लम्बा था। उसने अजीब-सी भाषा में काफी देर तक भाषण किया, जिसके शब्द भी मैं नहीं समझ सका।

बड़ी मुश्किल से इशारों से मैंने उसे समझाया कि मैं उनकी भाषा नहीं जानता, लेकिन फिर भी मैं उनका कोई नुकसान नहीं करना चाहता।

मुझे बड़ी भूख लगी हुई थी। मैंने अपने बायें हाथ की उंगली को बार-बार अपने मुंह में रखकर उन्हें बताया कि मुझे खाना चाहिए। काफी देर बाद उनका सरदार मेरा म[illegible] समझ सका।

वह नीचे उतर गया। उसने हुक्म दिया कि मेरे मुंह[illegible] आस-पास सीढ़ियां लगाई जाएं। फिर करीब सौ आदमी छो[illegible] छोटी टोकरियां लिए सीढ़ियों से चढ़े और मेरे मुंह की अ[illegible]

बढ़ने लगे। वे लोग मेरे लिए खाना लाए थे। टोकरियों में तरह-तरह की खाने की चीज़ें थीं। वे एक के बाद एक मेरे मुंह में अपनी टोकरियां खाली करने लगे। उनके खाने का स्वाद कुछ अजीब-सा था। वे तरह-तरह के पकवान मेरे लिए लाए थे, लेकिन उनका आकार इतना छोटा था कि कई टोकरियां खाली हो जाती थीं, फिर भी मेरा मुंह नहीं भर पाता था। वे लोग खुद यह देखकर हैरान थे। खैर, किसी तरह कुछ कौर मेरे पेट में पहुंचे।

अन्त में मैंने इशारे से बताया कि मुझे प्यास लगी है। अब तक वे लोग यह समझ गए थे कि थोड़ी चीज़ से मुझे संतोष नहीं हो सकता। इसलिए इस बार वे लोग बहुत बड़े-बड़े पीपे लुढ़का कर मेरे मुंह के पास ले आए। उनमें शराब जैसी कोई चीज़ भरी थी, जो काफी ज़ायकेदार थी। मैं एक घूंट में ही सब पी गया, फिर भी मेरी प्यास नहीं बुझी। मैंने और लाने का इशारा किया। वे कुछ पीपे और ले आए। लेकिन उनसे भी मुझे संतोष नहीं हुआ। यहां तक कि अन्त में उन्होंने इशारे से बताया कि उनके पास अब और नहीं है।

जब उनकी भीड़ मेरे शरीर पर आती थी, तो मेरा मन होता था कि मैं उनमें से कुछ को मुट्ठी में भरकर नीचे फेंक दूं। लेकिन फिर यह सोचकर रह जाता था कि इससे कहीं ये लोग नाराज़ न हो जाएं। जब वे लोग मुझे खिला-पिला चुके तो अन्त में अपने बड़े सरदार को बुला लाए। सरदार और उसके पीछे-पीछे दस-बारह आदमी सीढ़ियों से मेरे पैर पर चढ़े। वह मेरी छाती तक बढ़ आया और कुछ कहने लगा। उसकी बात तो मैं नहीं समझ सका, लेकिन उसके चेहरे से लगता था कि यह बहुत नाराज़ था। वह बार-बार एक दिशा की ओर इशारा कर रहा था। बाद में मुझे पता चला कि उधर उनकी राजधानी थी और यह तय किया गया था कि मुझे वहीं ले जाना चाहिए।

मैंने अपनी भाषा में उससे कुछ बातें करने की कोशिश की लेकिन उसकी समझ में कुछ नहीं आया। फिर मैंने हाथ के इशारे से उसे बताया कि मैं आज़ाद होना चाहता हूं। इस बात को वह समझ गया। लेकिन गर्दन हिलाकर उसने साफ इन्कार कर दिया और इशारे से बताया कि मुझे कैदी की तरह ही राजधानी में ले जाया जाएगा। लेकिन साथ ही उसने इशारे से यह भी प्रकट किया कि मेरे खाने-पीने का पूरा इन्तज़ाम किया जाएगा।

इसपर मैंने एक बार फिर अपने बंधन तोड़ने की कोशिश की, लेकिन फौरन उनके तीर मुझपर बरसने लगे। अन्त में परेशान होकर मैंने अपने-आपको उनके हवाले कर दिया। इससे वे बहुत खुश हुए। फौरन बहुत-से आदमी मेरे शरीर पर चढ़ आए और जहां-जहां तीरों से मुझे चोट पहुंची थी, वहां-वहां मरहम-पट्टी करने लगे। इससे मुझे बड़ा आराम मिला। अब मुझे नींद आने लगी। थोड़ी देर में मैं सो गया। जो शराब उन्होंने मुझे पिलाई थी, उसमें शायद कोई ऐसी दवा मिली हुई थी, जिससे नींद खूब आती है। लगभग आठ घण्टे तक मैं सोता रहा।

मैं उनके देश में आया हूं, इसकी खबर शायद उनके बादशाह को मिल चुकी थी। उसने हुक्म दिया था कि मेरे खाने-पीने की व्यवस्था अच्छी तरह की जानी चाहिए। उसने ही मुझे कैद करने का हुक्म भी दिया था। बाद में मुझे पता चला कि उनका बादशाह बहुत समझदार था और अपनी प्रजा की भलाई के लिए बहुत मेहनत करता था। उसकी बुद्धिमानी के कारण ही बौनों के इस देश में किसी बात की कमी नहीं थी। सब लोग आराम से रहते थे।

बादशाह का हुक्म था कि मुझे लादकर राजधानी में लाया जाए। लेकिन उन लोगों के पास जो गाड़ियां थीं उनमें से एक भी इतनी बड़ी नहीं थी कि उसमें मुझे लादा जा सकता। उनके

लिए एक समस्या पैदा हो गई। अन्त में पांच सौ बढ़ई और इंजीनियरों ने मिलकर मेरे लिए एक बड़ी-सी गाड़ी बनाना शुरू किया। बड़ी मेहनत के बाद गाड़ी तैयार हुई। यह ज़मीन से तीन इंच ऊंचा एक तख्त-सा था, जिसकी लम्बाई सात फुट और चौड़ाई चार फुट थी। इसमें बाईस पहिये लगे थे। सैकड़ों आदमी इसे खींच रहे थे।

किसी तरह खींचकर वे गाड़ी को मेरे पास लाए। मुझे उठाकर गाड़ी में लादना उनके लिए बड़ा मुश्किल काम था। इसके लिए पहले उन्होंने मेरे आसपास एक फुट ऊंचे अस्सी खम्भे गाड़े, जिनमें गिर्रियां लगी हुई थीं। फिर मेरे हाथ, पैर और गरदन में पट्टियां बांधी गईं। पट्टियों में रस्से बांधे गए जो बंडल बांधने के मोटे डोरों जैसे थे। इन रस्सों को गिर्रियों में डालकर सैकड़ों मज़दूरों ने मिलकर खींचना शुरू किया। करीब तीन घण्टों

की मेहनत के बाद वे लोग मुझे उठाकर गाड़ी पर लादने और उसपर बांधने में सफल हुए।

लेकिन यह सब उन्होंने मुझे बाद में बताया था। मैं तो उस समय गहरी नींद में सो रहा था। बादशाह की फौज के डेढ़ हज़ार सबसे बड़े और मज़बूत घोड़े मेरी गाड़ी खींच रहे थे। इन घोड़ों की ऊंचाई साढ़े चार इंच थी। चलते-चलते रात हो गई। रास्ते में एक जगह पड़ाव डाला गया। मेरी गाड़ी के दोनों तरफ पांच-पांच सौ सिपाही पहरा दे रहे थे। उनमें से आधे के हाथों में मशालें थीं और आधे सिपाही भाले और तीर-कमान लिए हुए थे। मैं ज़रा-सा हिलता-डुलता था तो फौरन वे चौकन्ने हो जाते थे। किसी तरह सवेरा हुआ और फिर से हमारी यात्रा शुरू हुई।

दोपहर होते-होते हम लोग नगर के दरवाज़े तक पहुंचे। बादशाह अपने दरबारियों के साथ मुझे देखने के लिए वहां पहले आया हुआ था। उसके अंगरक्षकों ने उसे मेरे ऊपर चढ़कर अच्छी तरह मेरा निरीक्षण करने से मना कर दिया। बादशाह दूर से ही मुझे देखता रहा। पास ही एक पुराना मन्दिर था। वहीं मुझे रखने का निश्चय किया गया।

यह मन्दिर कई साल से बंद था। कुछ साल पहले यहां एक आदमी मर गया था, इसलिए इसमें कोई नहीं जाता था। इसका दरवाज़ा, जो शहर में सबसे बड़ा दरवाज़ा माना जाता था, चार फुट ऊंचा और दो फुट चौड़ा था। दरवाज़े के दोनों ओर ज़मीन से छः इंच की ऊंचाई पर एक-एक खिड़की थी। मैं किसी तरह झुककर अन्दर चला गया। अन्दर बहुत-से लुहारों ने मिलकर मेरे पैर में जंजीरें डालने की तैयारी की। उनकी जंजीरें बदन में लगाने की चेन जैसी पतली और उतनी ही बड़ी थीं। ऐसी पचासों जंजीरें उन्होंने मेरे पैर में बांधी थीं और फिर उनमें छत्तीस ताले लगाए थे।

हालांकि मैं तब तो नहीं देख सका, लेकिन बाद में मुझे लोगों

ने बताया कि बादशाह उस समय अपने दरबारियों के साथ एक ऊंचे छज्जे पर चढ़कर मुझे देख रहा था। तब तक शहर में भी हल्ला हो गया और करीब एक लाख आदमी मुझे देखने आए। पहरेदारों के बावजूद उनमें से कई हज़ार मेरे ऊपर चढ़ गए। अन्त में बड़ी मुश्किल से फांसी का डर बताकर लोगों को वहां से भगाया गया।

ज़ंजीरें बांधने के बाद जब उन्हें यह विश्वास हो गया कि मैं किसी भी तरह भाग नहीं सकूंगा, तो उन्होंने उन रस्सियों को खोल डाला जिनमें मेरे हाथ-पैर बंधे थे। मैं खड़ा हुआ। मुझे खड़ा देखकर उन लोगों में भगदड़ मच गई। मेरी ज़ंजीर दो गज़ लम्बी थी, इसलिए मैं थोड़ा-सा घूम-फिर सकता था।

2

मैं खड़ा हुआ तो अपने आसपास देखकर चकित रह गया; इतना सुन्दर दृश्य मैंने कभी नहीं देखा था। ऐसा लगता था, जैसे आसपास एक बड़ा भारी बाग लगा है। उनके खेत, जो अधिक से अधिक चालीस फुट लम्बे-चौड़े थे, देखने में फूल की क्यारियों जैसे लगते थे। आसपास जंगल भी थे, जिनके सबसे ऊंचे पेड़ों की लम्बाई अधिक से अधिक सात फुट थी। बाईं तरफ शहर बसा हुआ था, जो देखने में खिलौनों का शहर मालूम पड़ता था, लेकिन बहुत ही सुन्दर बसा था।

थोड़ी देर बाद बादशाह अपने घोड़े पर सवार होकर मेरी ओर बढ़ा। हालांकि उसका घोड़ा उस देश के घोड़ों में सबसे अच्छी नस्ल का था, लेकिन मुझे देखकर वह भड़क गया। तब तक बादशाह के नौकर-चाकर दौड़ पड़े और उन्होंने घोड़े को संभाल लिया।

अब बादशाह घोड़े से उतरकर मुझे अच्छी तरह देखने के लिए मेरे आसपास घूमने लगा। लेकिन वह मुझसे काफी दूर ही रहता था।

बादशाह के हुक्म से मेरे लिए भोजन लाया गया। इस बार वे पहियेदार गाड़ियों में मेरे लिए खाना लाए। देखते-देखते उनकी बीस गाड़ियां मैंने खाली कर दीं। दस गाड़ियों में मीठी शराब के पीपे लदे थे। खा-पीकर मैंने एक डकार ली, जिससे वहां खड़े आदमी कांप उठे और उनमें भगदड़ मच गई।

मुझे देखने के लिए बेगम और शहज़ादे तथा शहज़ादियां भी अपनी बांदियों के साथ आई हुई थीं। बादशाह को मैं ठीक से देख नहीं पा रहा था, इसलिए मैं ज़मीन पर लेट गया और उसे देखने लगा। वह वहां के लोगों में सबसे अधिक खूबसूरत और बहादुर मालूम पड़ता था। उसकी उम्र पौने उन्तीस साल थी। अब वह बूढ़ा होने को आया था। सात साल से वह राज कर रहा था। उसने कई लड़ाइयां जीती थीं।

वह बहुत बढ़िया पोशाक पहने था। सिर पर मुकुट लगाए था, जिसमें हीरे-जवाहरात जड़े थे और कलगी लगी हुई थी। वह अपनी तीन इंच की तलवार निकाले खड़ा था। वह बार-

बार मुझसे कुछ कहता था। मैं भी उसे जवाब देने की कोशिश करता था। लेकिन हम दोनों में से कोई भी एक-दूसरे की भाषा समझ नहीं पाता था। बादशाह के साथ उसके देश के बड़े-बड़े विद्वान और भाषा-शास्त्री भी खड़े थे। मैंने अंग्रेज़ी, डच, लैटिन, फ्रेंच, स्पेनिश और इटालियन भाषाओं में उन लोगों से बात करने की कोशिश की, लेकिन सब बेकार; वे कुछ नहीं समझ सके। दो घंटे बाद बादशाह वहां से लौट गया।

मंदिर के आसपास अब भी तमाशबीनों की भीड़ लगी थी। उनमें से कुछ शरारती लोग चुपके-चुपके मुझपर तीर भी चला रहे थे। एक तीर आकर मेरी बाईं आंख पर लगा। पहरेदारों ने फौरन छः आदमियों को गिरफ्तार कर लिया। पहरेदारों ने सोचा कि अपराधियों को मेरे हाथ सौंप देना ही उनकी सबसे बड़ी सज़ा होगी। उन्हें धकेलते-धकेलते वे मेरे पास ले आए।

मैंने उनमें से पांच को पकड़कर अपने कोट की जेब में रख लिया और छठे को यह दिखलाने के लिए कि मैं उसे ज़िन्दा खाना चाहता हूं, अपने मुंह तक ले गया। वह बेचारा बुरी तरह चीखने लगा। सिपाही और वहां खड़े हुए दूसरे लोग भी घबरा उठे। जब मैंने अपनी जेब से कलम बनाने का अपना छोटा-सा चाकू निकाला, तब तो वे और भी घबराए। लेकिन मैंने उससे उस कैदी के बन्धन काट डाले और उसे आज़ाद कर दिया। लोगों ने राहत की सांस ली। इसके बाद मैंने जेब से निकालकर दूसरे कैदियों को भी आज़ाद कर दिया। इसका उन लोगों पर बहुत अच्छा असर पड़ा। बादशाह के दरबार में भी मेरी तारीफ हुई।

पन्द्रह दिन तक मैं ज़मीन पर ही सोता रहा, क्योंकि उन लोगों के पास इतना बड़ा बिस्तर नहीं था। अन्त में बादशाह के हुक्म से मेरे लिए एक बिस्तर तैयार किया गया। गाड़ियों में लादकर छोटे-छोटे छः सौ गद्दे वहां लाए गए। फिर एक के ऊपर

एक, चार गद्दों को रखकर और उन्हें आपस में सिलकर मेरे लिए एक बड़ा-सा गद्दा बनाया गया। फिर भी गद्दा इतना मोटा नहीं हो सका कि पत्थर के फर्श पर मैं आराम से सो सकूं। लेकिन इतने पर ही मुझे सन्तोष करना पड़ा। इसके बाद सैकड़ों छोटे-छोटे कम्बल जोड़कर उन्होंने मेरे लिए एक कम्बल तैयार किया। फिर भी वह मुझे पूरा नहीं पड़ता था।

मेरे आने की खबर उनके पूरे देश में फैल गई थी। दूर-दूर के शहरों और गांवों से लोग मुझे देखने के लिए राजधानी में जमा होने लगे। अगर बादशाह ने हुक्म निकालकर लोगों का आना नहीं रोका होता, तो शायद पूरा देश मुझे देखने के लिए उमड़

पड़ता। धीरे-धीरे वह भीड़ कम होने लगी।

इस बीच बादशाह अपने दरबारियों से इसके बारे में बहस करता रहा कि आखिर मेरे साथ क्या किया जाए। दरबारियों की समझ में कुछ नहीं आता था। उन्हें डर था कि अगर मैं किसी दिन भाग निकला तो क्या होगा? इसके अलावा मेरी खुराक देखकर वे घबरा रहे थे कि इस तरह तो उनके देश में अकाल ही पड़ जाएगा। कुछ दरबारियों की राय थी कि मुझे भूखा रखा जाए, और कुछ यह चाहते थे कि मेरे चेहरे पर ज़हरीला तीर चलाकर मेरी हत्या कर दी जाए।

इस बीच पहरेदारों से बादशाह को यह खबर मिलती रहती थी कि मैं कैसा बर्ताव कर रहा हूं। जब बादशाह ने यह सुना कि मैंने उन छः कैदियों को आज़ाद कर दिया, तो वह बड़ा खुश हुआ। उसने शहर के आसपास के गांवों में ऐलान करा दिया कि मेरे लिए हर रोज़ चालीस भेड़ें, छः बैल और काफी भोजन का इंतज़ाम किया जाए। गांववालों को इसके लिए बादशाह अपनी जेब से खर्च देता था। मेरी सेवा के लिए उसने छः सौ नौकर भी भेजे। वे मेरे आसपास अपने तम्बू तानकर रहने लगे।

तीन सौ दर्ज़ियों को हुक्म मिला कि वे मेरे लिए ऐसे कपड़े तैयार करें, जैसे कि उस देश के लोग पहनते हैं। बादशाह ने अपने देश के छः बहुत बड़े पंडितों को हुक्म दिया कि वे मुझे उस देश की भाषा पढ़ाएं। इसके अलावा उसने हुक्म दिया कि शाही घुड़साल के घोड़ों को बराबर मेरे आसपास घुमाया जाए ताकि वे आगे फिर कभी मुझे देखकर न भड़कें।

तीन हफ्ते में मैंने थोड़ी-थोड़ी उनकी भाषा भी सीख ली। इस बीच अक्सर बादशाह वहां आता था और मेरी पढ़ाई देखकर खुश होता था। मैंने जो दो-चार शब्द सीखे थे, उनके सहारे मैं इशारे से बादशाह के सामने अपनी यह इच्छा प्रकट करता था कि मुझे छोड़ दिया जाए। लेकिन उसका कहना था कि बिना दरबारियों से राय लिए वह ऐसा नहीं कर सकता। उसने

राय दी कि अपने व्यवहार से मुझे पहले उन लोगों को खुश करना चाहिए।

अन्त में एक दिन बादशाह ने अपनी यह इच्छा प्रकट की कि मुझे खुशी-खुशी अपनी तलाशी देनी चाहिए। उसे डर था कि मेरी जेब में खतनाक हथियार हो सकते हैं। मैं तलाशी देने के लिए राज़ी हो गया। उसने दो आदमियों को मेरी तलाशी लेने का हुक्म दिया। मैंने उन्हें उठा-उठाकर अपने कोट की जेबों में रखना शुरू किया। मैंने उन्हें अपनी सभी जेबें दिखाईं। सिर्फ दो गुप्त जेबों की तलाशी नहीं दी।

वे दोनों अपने हाथ में कागज़-कलम लेकर एक फेहरिस्त तैयार करते रहे। उन्होंने मेरी जेब में जो कुछ देखा, सब दर्ज कर लिया। फिर उन्होंने एक लम्बा बयान तैयार किया और उसे बादशाह के आगे पेश किया। उनका यह बयान मैंने बाद में पढ़ा था, जो इस प्रकार था :

"इस पहाड़नुमा आदमी के कोट की दाहिनी जेब में हमने बहुत खोजबीन के बाद एक मोटे कपड़े का टुकड़ा पाया, जो बादशाह सलामत के दरबारवाले कमरे के बराबर होगा। बाईं जेब में हमें एक बहुत बड़ा चांदी का सन्दूक मिला, जिसे हम दोनों मिलकर नहीं उठा सके। हमने सन्दूक खुलवाया और एक आदमी ने उसमें उतरकर देखा कि उसमें एक किस्म की धूल भरी हुई थी। वह धूल उड़कर हमारी नाक से घुसी तो हमें सैकड़ों छींकें आईं।

"उसकी बंडी की दाहिनी जेब में हमें एक पतली-सी सफेद चीज़ का एक बड़ा भारी बंडल मिला, जो मज़बूत रस्सियों से बंधा था। खोलने पर मालूम हुआ कि उसमें कुछ लिखा हुआ था। उसके अक्षरों का आकार हमारी हथेली के बराबर था। शाय वह कोई चिट्ठी थी।

"उसकी बाईं जेब में एक मशीननुमा कोई चीज़ थी, जिस बीस खम्भे लगे हुए थे। हमारा खयाल है कि इससे यह आदम

अपने बाल संवारता है। हमने उससे बार-बार सवाल पूछना ठीक नहीं समझा, इसलिए अपने अन्दाज़ से ही हम इस नतीजे पर पहुंचे कि यह उसका कंधा है।

"उसकी ब्रिचेज़ की दाहिनी जेब में हमें एक खोखली खम्भे-नुमा चीज़ मिली। इसकी लम्बाई एक आदमी के बराबर होगी। इसमें पीछे लकड़ी का एक बड़ा भारी कुन्दा लगा था। एक तरफ इसमें लोहे के बहुत-से टुकड़े बाहर निकले हुए थे। हम समझ नहीं सके कि यह क्या चीज़ है।

"बाईं जेब में एक दूसरी मशीननुमा कोई चीज़ थी। दाहिनी ओर की एक दूसरी छोटी जेब में सफेद और लाल धातु के कई गोल और चपटे टुकड़े थे। इनमें से कुछ टुकड़े, जो शायद चांदी के थे, हम दोनों मिलकर भी नहीं उठा सके।

"दाईं ओर की जेब में दो खम्भे थे। बड़ी मुश्किल से हम लोग उनपर चढ़ सके। पहले तो हमें लगा कि ये किसी एक ही चीज़ के बने हैं। लेकिन ऊपर चढ़कर हमने देखा कि उनमें लोहे की बड़ी चद्दरें लगी हैं। हमें लगा कि ये कोई खतरनाक चीज़ें हैं, इसलिए हमने उससे इनके बारे में पूछा। उसने बताया कि उसके देश में इनमें से एक चीज़ से दाढ़ी बनाई जाती है और दूसरी से खाने की चीज़ें काटी जाती हैं।

"उसके पास दो और भी जेबें थीं। जिनमें हम लोग नहीं घुस सके। ये बहुत ही तंग थीं। इनमें घुसना सम्भव नहीं था। इनमें से एक में एक लम्बी चांदी की ज़ंजीर लटक रही थी। इस ज़ंजीर में एक इंजन बंधा हुआ था। हमने उसे बाहर निकालने को कहा। यह एक बड़ा भारी गोला था, जो आधा चांदी का बना था और आधा किसी ऐसी धातु का बना था, जिसके आर-पार देखा जा सकता है। हमने देखा कि उसके अन्दर गोलाई में कुछ अजीब-से निशान बने हुए थे। हमने उन्हें छूने की कोशिश की, लेकिन उस पारदर्शी धातु के कारण हमारी उंगलियां वहां तक नहीं पहुंच सकीं।

"उस आदमी ने यह इंजन हमारे कानों के पास लगाया। हमने सुना कि उसमें बहुत शोर हो रहा था, जैसे कोई कारखाना चल रहा हो। यह सब अपने-आप हो रहा था। हमारा खयाल है कि वह या तो कोई अजीब-सा जानवर है, जिसे इस आदमी ने ज़ंजीर से बांध रखा है या वह इसका देवता है, जिसकी यह पूजा करता है। शायद वह इसका देवता ही है, क्योंकि इसने हमें अपने इशारे से बताया कि यह बिना उसे देखे कोई काम नहीं करता। पहरेदारों से भी हमें पता चला कि यह रोज़ सुबह उठते ही उसे अपनी जेब से निकालकर उसके दर्शन करता है।

"इस तरह हुज़ूर के हुक्म के मुताबिक हम लोगों ने इस आदमी की अच्छी तरह तलाशी ली। हमने पाया कि यह अपनी कमर में एक अजीब-सा कमरबन्द बांधे है, जो किसी बड़े भारी जानवर के चमड़े का बना हुआ मालूम होता है। इस कमरबन्द में एक तलवार बंधी हुई पाई गई, जिसकी लम्बाई पांच आदमियों के बराबर होगी। पर कमरबन्द में दाहिनी ओर एक बड़ा-सा बोरा बंधा है, जिसमें दो खाने हैं।

"इस बोरे के एक कोने में किसी वज़नी धातु के बने हुए गोले रखे हैं, जो हमारे सिर के बराबर आकार के होंगे। दूसरे खाने में न मालूम किस चीज़ के बहुत-से काले-काले दाने भरे हुए हैं, जो काफी हल्के मालूम पड़े। इन्हें हम लोगों ने आसानी से अपनी मुट्ठियों में भर लिया।

"इस तरह हम लोगों ने इस पहाड़नुमा आदमी की अच्छी तरह तलाशी ली और जो कुछ देखा और पाया उसे यहां वैसा ही दर्ज किया है ताकि हुज़ूर आसानी से अन्दाज़ लगा सकें कि इस आदमी के पास क्या-क्या है।"

यह फेहरिस्त बादशाह को पढ़कर सुनाई गई थी। उसने काफी सोच-विचार के बाद बड़े अदब के साथ मुझे हुक्म दिया कि मैं अपनी जेब की सारी चीज़ें उसके हवाले कर दूं। उसने अपने चुने हुए तीन हज़ार सिपाहियों को हुक्म दिया कि मुझे

चारों ओर से घेर लिया जाए। सिपाही अपने तीर-कमान लेकर खड़े हो गए। बादशाह ने पहले मुझसे अपनी तलवार निकालने को कहा। मैंने तलवार निकाली। समुद्र के पानी से उसपर कुछ जंग लग गया था लेकिन फिर भी वह काफी चमकदार थी।

तलवार को देखते ही सिपाहियों में भगदड़ मच गई। लेकिन बादशाह ज़रा बहादुर आदमी था। वह नहीं घबराया। उसने मुझसे तलवार को म्यान में डालकर छः फुट दूर फेंक देने को कहा। मैंने तलवार फेंक दी। इसके बाद उसने जेब से उन खोखले खंभों को निकालने के लिए कहा। उसका मतलब मेरी पिस्तौल से था। मैंने पिस्तौल निकाली। मेरी थैली में कुछ बारूद भी था। पिस्तौल में बारूद भरकर मैंने बादशाह को कहा कि वह डरे नहीं, मैं उसे पिस्तौल का काम दिखाता हूं। मैंने घोड़ा दबा दिया। एक ज़ोर का धड़ाका हुआ। चौंककर मारे डर के सैकड़ों सिपाही ज़मीन पर लेट गए। बादशाह भी घबरा गया।

मैंने अपनी दोनों पिस्तौलें भी उन लोगों को सौंप दीं। फिर गोलियां और बारूद भी उन्हें दे दिए। मैंने बादशाह को कहा कि बारूद को आग से अलग रखना, वरना इससे तुम्हारा पूरा महल उड़ सकता है। फिर मैंने अपनी घड़ी भी उसे सौंप दी। उसने अपने दो सबसे लम्बे आदमियों को हुक्म दिया कि इस मशीन को एक बांस में टांगकर कंधे पर उठा लो। घड़ी की टिक-टिक को सुनकर और उसकी सुई को अपने-आप चलते देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अपने सलाहकारों से उसके बारे में राय मांगी, लेकिन कोई भी उसके बारे में उसे ठीक-ठीक नहीं बता सका।

मैंने अपना बटुआ भी उसे सौंप दिया। उसमें सोने की नौ मोहरें और कई छोटे सिक्के थे। फिर मैंने अपना छोटा चाकू, रूमाल, सुंघनी की डिब्बी, उस्तरा, कंघा और डायरी भी दे दी। लेकिन ये सब चीज़ें मुझे लौटा दी गईं। सिर्फ मेरी तलवार और

पिस्तौलें तथा बारूद की थैली ही गाड़ियों में लादकर बादशाह के तहखाने में पहुंचा दी गई।

जैसाकि मैं पहले बता चुका हूं, मेरे पास दो गुप्त जेबें भी थीं, इनकी मैंने तलाशी नहीं दी। इनमें मेरा चश्मा, एक ग्रातशी शीशा ग्रौर दूसरी छोटी-मोटी चीज़ें थीं। इन चीज़ों को मैं देना नहीं चाहता था, क्योंकि इनके खराब हो जाने का डर था। ग्रांखें कमज़ोर होने के कारण मुझे ग्रक्सर चश्मे की ज़रूरत पड़ा करती थी।

3

मेरे भले स्वभाव ग्रौर ग्रच्छे व्यवहार का बादशाह ग्रौर उसके दरबारियों पर बहुत प्रभाव पड़ा। यहां तक कि मैंने सैनिकों ग्रौर ग्राम जनता का मन भी जीत लिया। मुझे यह ग्राशा होने लगी कि शायद जल्दी ही मुझे ग्राज़ादी मिल जाए। वहां के लोग ग्रब मुझसे बहुत कम डरने लगे थे। कभी-कभी मैं ज़मीन पर लेट जाता था ग्रौर पांच-छः ग्रादमियों को ग्रपने सिर पर नाचने देता था। यहां तक कि उनके बच्चे मेरे बालों में लुका-छिपी खेलने लगे।

ग्रब मैंने उनकी भाषा भी थोड़ी-थोड़ी सीख ली थी। एक दिन बादशाह ने मेरा मनोरंजन करने के लिए ग्रपने यहां खेल-कूद का ग्रायोजन किया। उसके राज्य के ग्रच्छे से ग्रच्छे खिलाड़ी वहां बुलाए गए। उन्होंने तरह-तरह के करतब दिखाए। इनमें से कुछ खेल ऐसे भी थे, जिन्हें ग्राज तक मैंने कभी नहीं देखा था। रस्सियों पर नाचने के उनके खेल को देखकर मैं दंग रह गया।

इस खेल में ग्रसल में वे लोग भाग लेते हैं जो दरबार में कोई ग्रोहदा पाना चाहते हैं। बचपन से ही वे इस कला को सीखते हैं। जब कोई ग्रोहदा खाली होता है तो उसे पाने के लिए बड़ी होड़ मचती है। उम्मीदवार बादशाह के सामने रस्सी पर नाच दिखाते हैं। इसमें जो बिना गिरे ग्रपना खेल पूरा कर लेता है, उसे ही बादशाह दरबार में नियुक्त करता है। कभी-कभी बादशाह ग्रपने मन्त्रियों को ग्रादेश दे देता है कि वे रस्सी पर नाच

दिखाएं, ताकि यह मालूम हो सके कि कहीं उनकी योग्यता कम तो नहीं हो गई है।

इस खेल में एक सफेद रस्सी, जो हमारे किसी मोटे धागे के बराबर होती है, दो फुट की लम्बाई में तान दी जाती है। ज़मीन से इसकी ऊंचाई बारह इंच होती है। इस रस्सी पर उम्मीदवारों को तरह-तरह के खेल दिखाने पड़ते हैं। कभी-कभी इसमें लोगों की मृत्यु भी हो जाती है। खुद मेरे सामने दो-तीन खिलाड़ियों ने अपने हाथ-पैर तुड़वा लिए। जब बादशाह के दरबारी और वज़ीर अपना खेल दिखाते, तब दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती थी। क्योंकि वे एक-दूसरे को नीचा दिखाने के लिए रस्सी पर खूब उछल-कूद करते थे। उनमें से एक भी ऐसा नहीं था, जो अब तक रस्सी से दो-एक बार गिरा न हो।

एक और खेल था जो खास-खास मौकों पर सिर्फ बादशाह, बेगम और बड़े वज़ीर के सामने दिखाया जाता है। पहले बादशाह ज़मीन पर छः-छः इंच लम्बे तीन रेशमी डोरे फैलाता है। इनमें से एक नीला, दूसरा लाल और तीसरा हरा होता है। खेल में सफल होने वाले उम्मीदवार को बादशाह की ओर से ये डोरे इनाम मिलते हैं।

यह खेल बादशाह के खास महल में ही होता है। यह एक अजीब तरह का खेल होता है। पहले बादशाह एक छड़ी लेकर खड़ा हो जाता है। फिर खिलाड़ी एक के बाद एक आते हैं और छड़ी के ऊपर से कूदते हैं। कभी वे उसके नीचे से निकल जाते हैं। बादशाह छड़ी को तेज़ी से हिलाता रहता है। शर्त यह रहती है कि छड़ी खिलाड़ी के शरीर को नहीं छूनी चाहिए। कभी बादशाह छड़ी खुद लेता है, कभी-कभी वज़ीर को यह काम सौंप देता है। जो सबसे अच्छा खेल दिखाता है उसे नीला धागा इनाम में मिलता है। लाल धागा दूसरे और हरा धागा तीसरे दर्जे के खिलाड़ी को मिलता है। इन धागों को वे अपनी कमर में

लपेटे रहते हैं। दरबार में अक्सर इस तरह के लोग दिखाई देते हैं।

शाही घुड़साल और फौज के घोड़ों को रोज़ मेरे आसपास घुमाया जाता था ताकि मुझसे उनका डर खत्म हो। कभी-कभी घुड़सवार उन्हें मेरे हाथ और पैर पर से कुदाया भी करते थे।

इस प्रकार किसी तरह दिन कट रहे थे। एक दिन मैंने बादशाह को एक खेल दिखाने की सोची। मैंने दो फुट लम्बी कुछ छड़ियां लाने को कहा। फौरन जंगलात के वज़ीर को हुक्म हुआ और गाड़ियों में लादकर छड़ियां आ गईं। मैंने नौ छड़ियों को ज़मीन पर इस तरह गाड़ा कि ढाई वर्ग फुट का एक घेरा बन गया। इसके बाद मैंने चार छड़ियों को एक-एक कोने पर ज़मीन से दो फुट की ऊंचाई पर बांध दिया। इसके ऊपर मैंने अपने बड़े रूमाल को तानकर एक मंच-सा बना दिया। इस मंच पर मैंने बादशाह के चुने हुए चौबीस घुड़सवारों को उनके घोड़ों के साथ उठाकर रख दिया। यहां वे नकली लड़ाई लड़ने लगे। इस खेल को बादशाह ने बहुत पसन्द किया। मैंने उसे उठाकर काफी देर तक मंच के पास खड़ा रखा। बेगम ने भी खेल देखा। इससे सब लोग बहुत खुश हुए।

लेकिन इस खेल में मेरा रूमाल फट गया और मरम्मत करने के बाद भी इस काबिल नहीं रहा कि उसपर घोड़े दौड़ सकें।

मुझे जब आज़ादी मिली तो उसके दो-तीन दिन पहले एक आदमी ने आकर बादशाह को खबर दी कि जहां मुझे पहले-पहल कैद किया गया था, वहां एक काली-काली-सी कोई बड़ी भारी चीज़ पड़ी है। इस चीज़ को उन्होंने खूब जांचा-परखा था और इतना पता लगा लिया था कि यह कोई जीवित चीज़ नहीं है।

अन्त में उन्होंने अन्दाज़ लगाया कि यह चीज़ मेरी हो सकती

है। उन्होंने बादशाह से कहा कि वे उस चीज़ को पांच घोड़ों की मदद से खींचकर महल तक ला सकते हैं।

उनकी बात से मैं समझ गया कि वह क्या चीज़ हो सकती है। वह मेरा हैट था, जिसे मैं वहीं भूल आया था। पानी में कूदने के पहले मैंने उसे अपने सिर पर बांध लिया था। बादशाह के हुक्म से वे लोग उसे गाड़ी में लादकर लाए थे। हैट पाकर मुझे बड़ी खुशी हुई।

दो दिन बाद बादशाह ने हुक्म दिया कि उसकी फौज को एक खास किस्म के खेल के लिए तैयार किया जाए। उसने मुझसे अपनी दोनों टांगें फैलाकर खड़े होने को कहा। फिर उसके राज्य के चुने हुए एक हज़ार घुड़सवार और तीन हज़ार पैदल सिपाहियों ने मेरे पैरों के बीच से निकलते हुए बादशाह को सलामी दी। इस परेड को देखने हज़ारों आदमी यहां इकट्ठे हुए थे।

मैंने बादशाह के नाम कई अर्ज़ियां लिखीं और अपने को रिहा करने की मांग की। अन्त में बादशाह ने अपने वज़ीर से उसके बारे में राय मांगी। बादशाह की नौ-सेना के बड़े कप्तान को छोड़कर और किसीने मेरी रिहाई का विरोध नहीं किया। बादशाह ने और दूसरे लोगों ने भी कप्तान को बहुत समझाया। अन्त में वह कुछ शर्तों पर मुझे रिहा करने के लिए राज़ी हुआ। इन शर्तों को उसने खुद तैयार किया।

जब शर्तें तैयार हो गईं तो वह उन्हें लेकर मेरे पास पहुंचा। पहले मैंने अपने देश के रिवाज़ के मुताबिक इन शर्तों को मानने की शपथ ली। फिर मैंने उन लोगों के रिवाज के मुताबिक अपना दाहिना पैर बाएं हाथ में पकड़ा और दाहिने हाथ की बीचवाली अंगुली माथे पर रखकर अंगूठे से दाहिना कान बन्द किया। उनके देश में शपथ लेने का यही ढंग था। नीचे मैं उन शर्तों को लिख रहा हूं, जिनके मुताबिक मुझे रिहा किया गया।

1—यह इन्सानी पहाड़ बिना हमारे हुक्म और इजाज़त के हमारे देश की सीमा के बाहर नहीं जाएगा।

2—जब तक इसे शाही हुक्म न दिया जाए, यह किसी शहर में नहीं घुसेगा। इसके आने के पहले दो घण्टे की चेतावनी देकर सड़कों को खाली करा दिया जाएगा।

3—इन्सानी पहाड़ बस्ती के बाहर ही रहेगा, और किसी चरागाह या खेत में नहीं बैठे-उठेगा।

4—बस्ती के बाहर की सड़कों पर घूमते समय वह हमारे किसी देशवासी को परेशान नहीं करेगा। बिना किसीकी मर्ज़ी के वह किसीको अपने हाथ में नहीं उठाएगा और न हमारे घोड़ों और गाड़ियों को कोई नुकसान पहुंचाएगा।

5—अगर कहीं बहुत जल्दी खबर भेजने का काम आ पड़ा, तो इस इन्सानी पहाड़ का फर्ज़ होगा कि यह हमारे हरकारे को अपनी जेब में रखकर जल्दी से उस जगह तक पहुंचा दे, और फिर उसे वहां से राजधानी तक ले आए।

6—लड़ाई के मौके पर यह हमारी मदद करेगा। ब्लेफुस्कू द्वीप में रहनेवाले हमारे दुश्मन हमपर हमला करने के लिए एक बहुत बड़ा जहाज़ी बेड़ा तैयार कर रहे हैं। इन्सानी पहाड़ इस बेड़े को हमारी ओर से ज़्यादा से ज़्यादा नुकसान पहुंचाएगा।

7—अपने खाली समय में यह बड़े-बड़े पत्थरों को ढोने और मकान बनाने में हमारे मज़दूरों की मदद करेगा।

8—इन्सानी पहाड़ दो महीने के भीतर हमारे पूरे देश का चक्कर लगाकर एक नक्शा तैयार करेगा और हमारे समुद्री किनारे की लम्बाई नापकर बताएगा।

अन्त में, अगर इन शर्तों को यह ठीक-ठीक पूरा करेगा तो इसे हर रोज़ खाने-पीने के लिए इतना सामान दिया जाएगा, जो हमारे 1728 देशवासियों के लिए काफी होगा। इसे बादशाह से मिलने की छूट रहेगी।

मैंने खुशी-खुशी इन शर्तों को मान लिया। नौ-सेना का

कप्तान न मालूम क्यों मेरे खिलाफ था। उसके कारण ही मुझे इन शर्तों को मानने के लिए मजबूर होना पड़ा। खैर, मेरी जंज़ीरें खोल दी गईं और मुझे रिहा कर दिया गया।

रिहाई के समय बादशाह वहीं मौजूद था। मैंने बादशाह के पैरों में सिर रखकर उसे धन्यवाद दिया। लेकिन उसने मुझे उठने के लिए कहा और बड़े प्रेम से मुझे विदा किया। वह बोला कि मेरे जैसे आदमी को अपने राज में पाकर वह बहुत खुश है। उसने विश्वास दिलाया कि अगर मैं कायदे से रहा तो मुझे किसी बात की तकलीफ नहीं होगी।

4

रिहा होने पर मैंने उस राज्य की राजधानी मिल्डेण्डो को देखने की इजाज़त मांगी। बादशाह ने इजाज़त दे दी, लेकिन साथ ही इस बात के लिए आगाह कर दिया कि मैं वहां के निवासियों को तंग नहीं करूंगा और उन्हें किसी तरह की हानि नहीं पहुंचाऊंगा। उस नगर के निवासियों को मेरे आने की सूचना भेज दी गई।

मैं राजधानी देखने पहुंचा। नगर के आसपास ढाई फुट ऊंची चहारदीवारी खिंची हुई थी। दीवार की चौड़ाई ग्यारह इंच थी। उसपर एक घोड़ागाड़ी आसानी से दौड़ सकती थी। दस-दस फुट की दूरी पर बुर्जियां बनी हुई थीं।

मैं नगर के पश्चिमी बड़े दरवाज़े के पास से दीवार को लांघकर नगर में पहुंचा। शहर में दो बड़ी सड़क थीं, जिनपर मैं घूमने लगा। मैंने इस डर से अपना कोट उतार रखा था कि कहीं उसके लटकते हुए कोनों से टकराकर मकान गिर न पड़ें। नगर के निवासियों को पहले से ही आदेश दे दिया गया था कि वे अपने-अपने मकानों में रहें। लेकिन फिर भी मैं बहुत सावधानी से कदम रख रहा था ताकि कोई कुचल न जाए। मकान की छतों और दीवारों पर लोगों की भीड़ लगी हुई थी। सब मुझे देख रहे थे।

यह नगर चौकोर आकार में बसा था। हर तरफ दीवार की लम्बाई पांच सौ फुट थी। नगर की दो बड़ी सड़कें, जो इसके

बीच से गुज़रती थीं और इसे चार भागों में बांटती थीं, लगभग पांच फुट चौड़ी थीं। आसपास की छोटी सड़कें और गलियां डेढ़ फुट चौड़ी थीं। मैं बाहर से ही उन्हें देख लेता था, क्योंकि उनके अन्दर मेरे लिए चलना मुश्किल था। नगर में पांच लाख आदमी रहते थे। मकान तीन से लेकर पांच मंज़िल तक ऊंचे थे। बाज़ार और दुकानें अच्छी तरह सजी हुई थीं।

बादशाह का महल शहर के बीचोंबीच बना था, जहां दोनों बड़ी सड़कें आकर मिलती हैं। महल से बीस फुट की दूरी पर चारों ओर दो फुट ऊंची एक दीवार खिंची हुई है। बादशाह से इजाज़त लेकर मैंने दीवार लांघी। दीवार और महल के बीच इतनी दूरी थी कि मैं आसानी से चारों ओर घूमकर महल को देख सकता था। महल के बाहर चालीस फुट लम्बी-चौड़ी बारादरी थी, जो दो भागों में बंटी हुई थी। अन्दर की तरफ बादशाह के रहने की इमारत थी। मैं उसे देखना चाहता था, लेकिन वहां तक पहुंचना मेरे लिए कठिन था, क्योंकि उसके दरवाज़े अठारह इंच ऊंचे और सात इंच चौड़े थे।

बारादरी के आसपास की इमारत कम से कम पांच फुट ऊंची थी। मकान की दीवारें चार इंच मोटी थीं। मैं उनके पास तक नहीं जा सकता था, क्योंकि इससे उनके गिर पड़ने का खतरा था। लेकिन बादशाह चाहता था कि मैं उसके महल को अच्छी तरह देखूं, ताकि मुझे मालूम हो सके कि वह कितनी शानशौकत से रहता है। लेकिन तीन दिन तक मेरे लिए महल देखना संभव नहीं हो सका।

इस बीच मैंने शाही बाग से कुछ बड़े पेड़ काटे और किसी तरह ठोक-पीटकर अपने लिए तीन फुट ऊंची दो तिपाइयां बनाईं। लोगों को फिर से घर से बाहर न निकलने का हुक्म दिया गया। मैं तिपाइयां लेकर महल के पास पहुंचा। फिर एक तिपाई रखकर मैं उसपर चढ़ गया। दूसरी तिपाई मैंने भीतरी महल के पास रखी और फिर उसपर जा बैठा। इस तरह एक के बाद

एक तिपाइयों को उठाकर रखते हुए मैं महल के बिलकुल भीतरी हिस्से तक पहुंच गया। वहां जाकर मैं रुककर और खिड़कियों में आंख लगाकर महल की सजावट देखने लगा। अन्दर शहज़ादों के लिए काफी बड़े-बड़े कमरे थे। दास-दासी उनकी सेवा में लगे थे। बेगम का महल बहुत खूबसूरती से सजा था। मुझे देखकर बेगम मुस्करा दी। उसने खिड़की से अपना हाथ बाहर निकाल लिया, जिसे चूमकर मैंने उसका अभिवादन किया।

मेरी रिहाई के कोई पन्द्रह दिन बाद एक दिन सवेरे सबसे बड़ा वज़ीर एक नौकर के साथ मेरे घर आया। गाड़ी से उतर कर उसने मुझसे एक घंटे बात करने की इच्छा प्रकट की। मैंने लेटकर अपना कान उसकी तरफ कर दिया ताकि आसानी से वह बात कर सके। लेकिन उसने इच्छा प्रकट की कि मैं उसे अपने हाथ में उठा लूं और बात करूं।

सबसे पहले उसने मुझे अपनी आज़ादी के लिए बधाई दी। पहले से ही उससे मेरी कुछ दोस्ती हो गई थी। उसने बताया कि इतनी जल्दी मेरी रिहाई होने का असली कारण यह है कि इस समय बादशाह के दरबार में कुछ गड़बड़ी चल रही है। नहीं तो मुझे इतनी आसानी से छुट्टी नहीं मिल सकती थी।

वह कहने लगा, "आप जैसे विदेशियों को ऐसा लग सकता है कि हम लोग बहुत आराम से रह रहे हैं और हमें कोई चिन्ता नहीं है। लेकिन असल में हमारे सामने दो बहुत बड़ी कठिनाइयां हैं। एक तो हमारे यहां आपस में बहुत फूट है। इसके अलावा, हमें बाहर से एक ताकतवर दुश्मन के हमले का डर बना रहता है। अन्दर की अनबन के बारे में मैं आपको बताता हूं कि कोई सत्तर महीने पहले की बात है, इस राज्य के दो दलों में झगड़ा चलता था। एक का नाम था ऊंची एड़ी और दूसरे का नाम था नीची एड़ी।"

फिर उसने बताया, "ऊंची एड़ी दल के लोग, हालांकि हमारे पुराने रीति-रिवाज़ों और नियमों को मानते हैं, लेकिन

फिर भी बादशाह सरकारी कामों में उनसे मदद नहीं लेता। उसने अपने सारे महकमे नीची एड़ी दल के लोगों को सौंप रखे हैं। इसका कारण यह है कि खुद बादशाह की एड़ी छोटी है।

"इन दोनों दलों में आपस में बहुत अनबन है। यहां तक कि एक-दूसरे का छुआ खाना नहीं खाते हैं, पानी नहीं पीते और बोलचाल भी नहीं रखते। हालांकि तादाद में ऊंची एड़ीवाले ज़्यादा हैं, फिर भी ताकत हमारे हाथ में है।

"कभी-कभी हम लोग यह सोचकर बहुत चिन्तित होते हैं कि बड़े शाहज़ादे की एड़ियां ऊंची होती जा रही हैं। कम से कम उसकी एक एड़ी तो ऊंची है ही। इससे दोनों दलों में झगड़े का डर और भी बढ़ गया है।

"हमारे देश का यही हाल है। न आपस में एकता है, न मिल-जुलकर रहने की कोई कोशिश करता है। ऊपर से हमेशा बाहरी शत्रुओं के हमले का डर बना रहता है। खासतौर से ब्लेफुस्कू द्वीपवाले हमपर हमला करने की धमकी देते रहते हैं। उनका राज्य भी हमारे इतना ही बड़ा है। यहां के लोग भी बड़े लड़ाकू होते हैं। शायद वह दुनिया का दूसरा बड़ा राज्य है।

"हालांकि, तुम्हारा तो कहना यह है कि दुनिया में ऐसे कई देश हैं, जहां तुम्हारी जैसी बड़ी आकृतिवाले मनुष्य रहते हैं, लेकिन हमारे बड़े-बूढ़े और विद्वान लोगों को तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं होता। उनका खयाल है कि तुम इस दुनिया के आदमी नहीं हो। तुम शायद चन्द्रलोक से या और किसी ग्रह-नक्षत्र से आए हो। अगर तुम्हारे जैसे सौ आदमी आ जाएं तो हमारा राज्य तहस-नहस हो सकता है। देखते-देखते हमारे सारे फल-फूल, खाने-पीने की चीज़ें, भेड़-बकरी वगैरह खतम हो जाएं। हमारे छः हज़ार महीने पुराने इतिहास में कभी भी किसीने यह नहीं बताया कि इस पृथ्वी पर देश लिलिपुट और ब्लेफुस्कू को छोड़कर इतने बड़े देश और भी हैं। हमारे इतिहास में बस यही दो बड़े देश माने गए हैं।

"पिछले लगभग छत्तीस महीनों से इन दोनों विशाल राष्ट्रों में लड़ाई चलती आ रही है। कई बार बड़ी घमासान लड़ाई हो चुकी है। शुरुआत एक बहुत छोटी-सी बात को लेकर हुई। सीधी-सी बात है कि खाने के लिए जब अंडा तोड़ा जाता है तो चौड़े हिस्से की तरफ से तोड़ा जाता है। एक बार की बात है कि आजकल जो बादशाह हैं उनके दादा अपने लड़कपन में एक अंडा तोड़ रहे थे। इससे उनकी उंगली में चोट आ गई। इसपर उनके पिता ने हुक्म निकाल दिया कि आगे अंडे छोटे सिरे की ओर से तोड़े जाएं। ऐसा न करना उन्होंने गैरकानूनी करार दिया। ऐलान करा दिया गया कि जो कोई अंडे को छोटे सिर की ओर से नहीं तोड़ेगा उसे बहुत कड़ी सज़ा दी जाएगी।

"हमारे पुराने इतिहास में लिखा है कि उनके इस हुक्म का लोगों ने बड़ा विरोध किया। उसी बात को लेकर छः बार हमारे देश में क्रान्तियां हुईं, दंगे-फसाद हुए, यहां तक कि एक बादशाह की जान चली गई। फिर इसी वजह से दूसरे बादशाह को अपनी गद्दी छोड़ने को मजबूर होना पड़ा। हमारे इन अंदरूनी झगड़े-फसाद और गृहयुद्ध को पड़ौस के ब्लेफुस्कू देश के राजा लोग हमेशा बढ़ावा देते रहे हैं। हमारे यहां के अपराधी अक्सर भाग-भागकर उस देश में शरण लेते हैं। अब तक अंडे को छोटे सिरे की ओर से न तोड़ने के कारण करीब-करीब ग्यारह हज़ार लोग अपने प्राण गवां चुके हैं।

"ब्लेफुस्कू देश के बादशाह हमारे यहां से भागे हुए लोगों को न सिर्फ अपने यहां शरण ही देते हैं, बल्कि उन्हें रुपये-पैसे और हथियार देकर गुप्त रूप से हमारे यहां भेजते रहे हैं। वे लोग यहां आकर चोरी-चोरी अपनी फौज तैयार करते हैं और फिर अचानक बलवा कर बैठते हैं। जब भी हमारे यहां इस तरह की गड़बड़ी होती है, तो उधर ब्लेफुस्कू देश की सेनाएं भी चढ़ आती हैं। अब तक युद्ध में हम लोग चालीस बड़े-बड़े जहाज़ और करीब तीस हज़ार नौ-सैनिक और सिपाही खो चुके हैं। लेकिन इस बीच हमने दुश्मन को भी खूब नुकसान पहुंचाया है और उसके भी कई जहाज़ों को बर्बाद किया है।

"लेकिन इधर उन्हें कुछ मौका मिला। उन्होंने फिर से अपना एक बड़ा भारी जहाज़ी बेड़ा तैयार किया है। अब वे बहुत जल्दी ही हम पर हमला करनेवाले हैं। हम लोग भी लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं। बादशाह सलामत को उम्मीद है कि अगर लड़ाई हुई तो इसमें आप हमारी पूरी मदद करेंगे। हमें आपकी दैवी शक्ति और वीरता का पूरा भरोसा है। मैं आज आपके पास इसीलिए आया हूं। आप वादा कीजिए कि संकट के समय हमारा साथ देंगे।"

पहले तो मैंने उससे कहा कि एक विदेशी होने के नाते मुझे

उन लोगों के आपसी झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए। लेकिन फिर मैंने वादा किया कि मैं बादशाह और उनकी सल्तनत को बचाने के लिए अपनी जान की भी परवाह नहीं करूंगा।

इससे वह बहुत खुश हुआ। उसने झुककर मुझे सलाम किया और फिर जाकर बादशाह को सारी बातें बता दीं। अब बादशाह मुझसे और भी खुश रहने लगा।

5

ब्लेफुस्कू साम्राज्य लिलिपुट के उत्तर-पूर्व में एक द्वीप पर बसा था। दोनों देशों के बीच आठ सौ गज़ चौड़ी एक खाड़ी थी। मैंने उस साम्राज्य को अभी तक देखा नहीं था। जब से युद्ध की बात सुनी थी तब से जान-बूझकर मैं उधर के किनारे की ओर जाता भी नहीं था। शत्रु के जहाज़ अक्सर खाड़ी में चक्कर लगाते रहते थे। मैं नहीं चाहता था कि मेरे यहां होने की खबर उन्हें मिल सके। शायद उन्हें यह भी पता नहीं था कि मैं लिलिपुट में हूं। दोनों देशों में इतनी तनातनी थी कि यहां की बात का वहां पहुंचना या वहां की खबर का यहां आना लगभग असम्भव हो गया था।

मैंने लिलिपुट के बादशाह को बताया कि मैं शत्रु के पूरे जहाज़ी बेड़ों को पकड़ लाने की योजना बना रहा हूं। हमारे गुप्तचरों ने पता लगाया था कि शत्रु के जहाज़ अपने बन्दरगाह में लंगर डाले पड़े हैं। वे इस बात का इन्तज़ार कर रहे थे कि मौसम अच्छा होते ही वे एक दिन अचानक हमपर हमला कर देंगे। मैंने लिलिपुट के पुराने जहाज़ियों और मल्लाहों से पता लगाया कि खाड़ी की ज्यादा से ज़्यादा गहराई कितनी होगी। उन्होंने बताया कि खाड़ी बीच में ज़्यादा से ज़्यादा बीस 'ग्लम ग्लफ' गहरी है। हमारी नाप के मुताबिक यह लगभग छः फुट की गहराई थी।

एक दिन मैं उत्तर-पूर्व के किनारे से होकर ब्लेफुस्कू की

ओर बढ़ गया। खाड़ी को पार करने में मुझे कोई दिक्कत नहीं हो सकती थी। लेकिन मैंने पहले स्थिति को ठीक से समझ लेना चाहा। मैं एक पहाड़ी के पीछे छिप गया और चश्मा लगाकर वहां से शत्रु के जहाज़ी बेड़े को देखने लगा। बहुत-से जहाज़ थे। कुछ में सामान लदा था और बाकी लड़ाकू जहाज़ थे।

मैं लौट आया। आकर मैंने बहुत-सी मज़बूत रस्सियां और लोहे की छड़ें लाने को कहा। जल्दी ही मेरे लिए सारा सामान इकट्ठा किया गया। रस्सियों के नाम पर वे मज़बूत डोरियां ले आए और लोहे की छड़ों की जगह बुनाई की सलाइयां। उनके देश में इससे मोटी रस्सी नहीं थी और न सलाइयों से मोटी छड़ें ही थीं।

मैंने डोरी को तिहरा कर अच्छी तरह बंट लिया ताकि वह मज़बूत हो जाए। इसी तरह मैंने तीन-तीन सलाइयों को भी आपस में लपेटकर मज़बूत बना लिया और उनके सिरे मोड़ दिए। इसके बाद मैंने पचास रस्सियों में इन सलाइयों को कंटिया की तरह बांध लिया।

इस तरह तैयार होकर मैं दुश्मन के जहाज़ पकड़ने निकला। जूते और मोज़े उतारकर मैं खाड़ी में आगे बढ़ गया। बीच में पानी की धारा काफी तेज़ थी। लेकिन चूंकि उसकी गहराई छः फुट से ज़्यादा नहीं थी, इसलिए मैं थोड़ी-सी मेहनत के बाद ही उस पार पहुंच गया। मुझे देखकर शत्रु के सिपाही घबराकर चीखने लगे।

मुझे अपनी ओर आते देखकर सारे सिपाही जहाज़ों से कूद पड़े और किनारे की ओर भागने लगे। उनकी तादाद कम से कम तीस हज़ार होगी। लेकिन आगे बढ़ने की उन्हें हिम्मत नहीं हो रही थी। किनारे पहुंचकर उन्होंने मुझपर तीरों की वर्षा शुरू कर दी। उनके छोटे-छोटे तीर आकर मेरे हाथ, पांव और मुंह पर चुभने लगे। मैंने जल्दी-जल्दी एक-एक कंटिया

उनके जहाज़ों में फंसाई और फिर सब रस्सियों को इकट्ठा कर लिया।

लेकिन उनका हमला बढ़ता जा रहा था। मुझे डर था कि कहीं कोई तीर मेरी आंख में न आ लगे। लेकिन चश्मे ने मेरी काफी मदद की। उन लोगों के तीर बरसते रहे और मैं उनके जहाज़ों को समेटता रहा। लेकिन जब मैंने सब जहाज़ों को बांधकर खींचना चाहा तो उनमें से एक भी नहीं हिला। वे सब लंगर डाले हुए थे और मज़बूत रस्सियों से किनारे से बंधे हुए थे।

अन्त में मुझे अपना चाकू निकालना पड़ा। मैंने एक-एक जहाज़ का लंगर काटा। इस बीच करीब दो सौ तीर मेरे हाथों पर और पीठ पर आ लगे। लेकिन मैंने इसकी कोई परवाह नहीं की। शत्रु के करीब पचास सबसे बड़े जहाज़ मैंने बांध लिए थे। फिर मैंने उन्हें खींचना शुरू किया।

पहले तो शत्रु की समझ में नहीं आया कि मैं उनके जहाज़ों के साथ क्या करना चाहता हूं। लेकिन जब किनारे पर खड़े हुए सिपाहियों ने देखा कि मैं आसानी से उनके जहाज़ों को खींचकर दूसरी ओर ले जा रहा हूं तो वे घबराकर चीखने लगे। उनकी समझ में नहीं आया कि क्या करें। उन्होंने और भी तेज़ी से तीर चलाना शुरू किया।

लेकिन तब तक मैं काफी आगे निकल आया था। उनके तीर वहां तक नहीं पहुंच सकते थे। कुछ देर के लिए मैं बीच में रुक गया। एक-एक करके मैंने सारे तीर, जो कांटों की तरह मेरे हाथ-पैर में चुभे हुए थे, बीन-बीनकर निकाले। बादशाह ने पहले से ही थोड़ा-सा मरहम दिलवा दिया था। मैंने अपने घावों पर मरहम लगाया। चश्मा उतारकर जेब में रखा। फिर किसी तरह दुश्मन के जहाज़ों को खींचता हुआ मैं लिलिपुट के किनारे आ पहुंचा।

बादशाह अपने सारे दरबारियों के साथ किनारे पर खड़ा

मेरा इन्तज़ार कर रहा था। पहले तो सब लोग बहुत घबराए, क्योंकि मैं गले तक पानी में डूबा हुआ था और उन्हें दिखाई नहीं दे रहा था। उन्होंने सोचा कि दुश्मन के जहाज़ उनपर हमला करने के लिए बढ़े आ रहे हैं। लेकिन थोड़ी ही देर में उन्होंने देखा कि मैं जहाज़ों को खींच रहा हूं तो उनकी खुशी की सीमा न रही। मारे खुशी के लोग नाचने लगे। बादशाह ने आगे बढ़कर मेरा स्वागत किया और वहीं सागर किनारे मुझे अपने राज्य का सबसे बड़ा खिताब 'नारडेक' दिया। मैंने झुककर उसे सलाम किया।

बादशाह ने अपनी इच्छा प्रकट की कि फिर कभी मौका मिलने पर मैं दुश्मन के देश में जाऊं और उसके सारे जहाज़ पकड़ लाऊं। वह दुश्मन के राज्य को जीतने के सपने देखने

लगा। वह बोला, "मैं उस पूरे देश को तुम्हारी मदद से जल्द ही अपने राज्य में मिला लेना चाहता हूं। जो देशद्रोही यहां से भागकर गए हैं, उन सबको फांसी पर चढ़ा दिया जाएगा।"

लेकिन मैंने उसे समझाया, "हुज़ूर, इस समय यह कहना ठीक नहीं है। इसके अलावा किसी आज़ाद मुल्क को बिना किसी कारण के मैं आपका गुलाम बनाना नहीं चाहता। कुछ दिन और बीतने दीजिए, इसके बाद इस सवाल पर हम लोग विचार करेंगे।"

उसने इस मामले पर अपने दरबारियों से भी सलाह की। उसे यह बहुत बुरा लगा कि मैंने उसके मुंह पर ही उसकी योजना का विरोध किया। इस अपराध के लिए वह मुझे कभी क्षमा नहीं कर सकता था। लेकिन उस समय वह कुछ नहीं बोला। उसके दरबारियों में जो दो-चार बुद्धिमान लोग थे, वे भी चुप रहे। मुझे लगा कि वे मेरे विचार से सहमत हैं।

लेकिन दरबार में मेरे दुश्मन भी कम नहीं थे। उन्होंने बादशाह को मेरे खिलाफ भड़काने का एक मौका देखा। अब दरबार में मेरे खिलाफ षड्यंत्र होने लगे। मुझे सज़ा देने की तरकीबें सोची जाने लगीं। दो महीने बाद ही मुझे इसका फल भी भुगतना पड़ा।

जब मैं दुश्मन के जहाज़ों को पकड़ लाया तो करीब तीन हफ्ते बाद वहां से एक विशेष दूत, वहां के बादशाह का सन्देश लेकर लिलिपुट आया। वह शान्ति का सन्देश लाया था। बादशाह ने फिर अपने दरबारियों से राय ली और कुछ शर्तों पर शत्रु से संधि कर ली।

संधि हो जाने पर उस देश के छः राजदूत इस देश में आए। उनके साथ उनके पांच-पांच सौ नौकर भी थे। जब उन राजदूतों को यह मालूम हुआ कि मैंने उनके देश पर होनेवाले हमले का विरोध किया था तो वे लोग बहुत खुश हुए और मुझसे मिलने आए। उन्होंने मेरी बड़ी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आप

इतने विशाल शरीर और अद्वितीय शक्ति के आदमी होते हुए भी बहुत दयालु हैं। उन्होंने अपने बादशाह की ओर से मुझे अपने देश में आने का न्यौता दिया। फिर मैंने उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार अपने कुछ करतब दिखाए।

इस प्रकार मैंने उन्हें खुश करने की कोशिश की। जब वे लोग जाने लगे तो मैंने कहा, "अपने बादशाह को मेरी ओर से सलाम कहना। जब मैं अपने देश वापस लौटूंगा तो रास्ते में उनके देश का भी चक्कर लगाऊंगा।"

जब मैं दूसरी बार अपने बादशाह से मिला तो मैंने उससे कहा, "मैं ब्लेफुस्कू के राजा से मिलना चाहता हूं।" वह राज़ी तो हो गया, लेकिन बहुत खुश नहीं हुआ। बाद में मुझे पता चला कि खज़ांची और नौ-सेना के कप्तान ने मेरे खिलाफ उसके खूब कान भरे थे। शत्रुदेश के राजदूतों से मैंने क्या बातें कीं, इसे भी खूब तोड़-मरोड़कर उन्होंने बादशाह को बताया। मैंने अपनी तरफ से उसके खिलाफ कोई काम नहीं किया था। लेकिन मैं अच्छी तरह जानता था कि उसके दरबार में मेरे खिलाफ षड्यंत्र रचे जा रहे हैं।

यहां यह बता देना ठीक होगा कि मैंने इन राजदूतों से एक दुभाषिये की मदद से बातचीत की थी। दोनों देशों की भाषा में बहुत फर्क था। उस दुभाषिये से मेरे विरोधी दरबारियों ने बाद में सारी बातें पूछ ली थीं। लेकिन बादशाह ने मुझे साफ-साफ कभी कुछ नहीं कहा। उलटे मुझे अपने देश वापस लौटने की इजाज़त दे दी।

6

किसी तरह दिन बीतते रहे। मेरे शत्रु मेरे खिलाफ षड्यंत्र करते रहे। मुझे अपनी ज़िन्दगी में कभी किसी बादशाह के दरबार में उठने-बैठने का मौका नहीं मिला था। मैं दरबार के रीति-रिवाजों से बहुत कम परिचित था। मुझसे अक्सर गलती हो जाती थी। इसका फायदा उठाकर मेरे शत्रु मेरे खिलाफ बराबर बादशाह के कान भरा करते थे।

मैं ब्लेफुस्कू के बादशाह से मिलने जाने की तैयारी करने लगा। लेकिन अचानक एक दिन रात में एक बहुत बड़ा दरबारी अपनी पालकी में बैठकर मेरे यहां आया। वह लोगों की नज़र बचाकर आया था। उसने अपनी पालकी भी ढक रखी थी। आकर उसने मुझसे एकान्त में बातचीत करने की इच्छा प्रकट की। पालकीवालों को लौटा दिया। मैंने उस दरबारी को पालकी सहित उठाकर अपनी जेब में रख लिया। फिर मैंने अपने नौकरों से कहा, "मेरी तबियत खराब है। और मैं ज़रा जल्दी सोना चाहता हूं।" उन लोगों के चले जाने के बाद मैंने अपने घर का दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लिया। फिर मैंने उस दरबारी को जेब से निकालकर एक टेबिल के पास रखा, टेबिल के पास बैठकर मैं उससे बातें करने लगा।

उसने बड़ा गम्भीर चेहरा बना रखा था। जब मैंने उससे इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि बादशाह और उसके दरबारियों ने मेरे बारे में खूब सोचा-विचारा है। उन्होंने मुझे

देशद्रोह के लिए अपराधी माना है। अपने इस अपराध के लिए मुझे यह सज़ा दी जाने वाली है कि मेरी आंखें फोड़ दी जाएं। उस दरबारी ने बताया कि तीन दिन के भीतर ही बादशाह का हुक्म होने वाला है।

उसकी बात पर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने लिलिपुट के बादशाह या उसकी जनता के खिलाफ कोई काम नहीं किया था। फिर भी मुझे सज़ा दी जा रही थी। मैं उनसे बचने का उपाय सोचने लगा। दरबारी के चले जाने के बाद मैंने तय किया कि मैं तीन दिन के पहले ही बादशाह की इजाज़त के मुताबिक ब्लेफुस्कू के लिए रवाना हो जाऊंगा। मैंने अपने उस दरबारी मित्र को एक चिट्ठी में अपना यह निश्चय सूचित भी कर दिया।

उसका जवाब आने के पहले ही मैं चल पड़ा। किनारे आकर मैंने शाही बेड़े का एक सबसे बड़ा जहाज़ खोला और उसमें अपने कपड़े वगैरह रख दिए। फिर उस जहाज़ को खींचता हुआ मैं ब्लेफुस्कू द्वीप के किनारे पहुंच गया। वहां बादशाह अपने दरबारियों के साथ मेरा स्वागत करने के लिए किनारे पर ही खड़ा था।

ज्योंही मैं ब्लेफुस्कू द्वीप के किनारे पहुंचा, बादशाह और उसके दरबारी मेरे स्वागत में अपने-अपने घोड़ों से उतर आए। साथ में बेगम और उसके नौकर-चाकर भी थे। मैंने झुककर सबको सलाम किया। मैंने बादशाह को बताया कि मैं यहां अपनी इच्छा से ही आया हूं। मुझे किसी ने किसी विशेष उद्देश्य से नहीं भेजा है।

उसने मुझे शहर घुमाने के लिए अपने दो आदमी दे दिए। मैं उन दोनों को अपने हाथ में उठाकर राजधानी देखने निकला। बादशाह मुझसे महल में मिलना चाहता था। उसने अपने दरबारियों के साथ मेरा शानदार स्वागत किया। फिर उसने मुझे एक अच्छे-से मकान में ठहराया, जो मेरे लिए बहुत ही छोटा

पड़ता था। मुझे ज़मीन पर ही सोना पड़ता था।

तीन दिन बाद एक दिन सुबह मैं उस द्वीप के उत्तर-पूर्वी किनारे पर टहल रहा था कि अचानक मेरी नज़र एक चीज़ पर पड़ी, जो समुद्र की लहरों पर हिल रही थी। मुझे लगा कि कोई नाव उलट गई है। मैंने फौरन अपने जूते और मोज़े उतारे और उस चीज़ की ओर बढ़ना शुरू किया। करीब तीन सौ गज आगे जाने पर मैंने देखा कि वह सचमुच की एक नाव थी, जो मेरे लिए काफी थी। शायद वह किसी जहाज़ से छूटकर दूर निकल आई थी और यहां आकर उलट गई थी। मैंने इस नाव को किनारे ले जाना चाहा, क्योंकि अपने देश लौटते समय यह नाव मेरे काम आ सकती थी।

लौटकर मैंने बादशाह से कहा कि मुझे इस काम में उसकी मदद की ज़रूरत है। मैंने इसके लिए उससे बीस बड़े-बड़े जहाज़ और तीन हज़ार आदमियों की मदद मांगी। बादशाह राज़ी हो गया। उसने जहाज़ और आदमी दे दिए।

इन जहाज़ों को मैं उस नाव के पास तक ले गया। मल्लाहों के पास पहले से ही लम्बी-लम्बी रस्सियां थीं, जिनमें बहुत मज़बूत कांटे बंधे थे। पास जाकर मैंने उस नाव में रस्सियां बांध दीं और फिर सब मिलकर उस नाव को खींचने लगे। मैं चूंकि पानी में था, इसलिए नाव को धक्का देने में मुझे दिक्कत हो रही थी। नाव सचमुच बहुत भारी थी। इतने जहाज़ और मल्लाह मिलकर भी उसे बहुत कठिनाई से खींच पा रहे थे। अंत में जब हवा उसी दिशा में चलने लगी तब कहीं जाकर हमारा काम कुछ आसान हुआ। किसी तरह नाव किनारे आई। हज़ारों आदमियों की भीड़ उस बड़ी भारी नाव को देखने के लिए किनारे पर इकट्ठी हुई।

मैंने बादशाह से कहा, "ईश्वर ने सौभाग्य से मेरे लिए यह नाव भेज दी है। इसमें बहुत थोड़ी मरम्मत की ज़रूरत है। जब मैं घर लौटूंगा तो यह नाव मेरे बहुत काम आएगी। इसमें

कुछ चीज़ों की ज़रूरत है, जैसे पाल, डांड वगैरह। कृपया अपने आदमियों से कहकर मेरे लिए इनका इन्तज़ाम करवा दीजिए।"

बादशाह ने नाव ठीक कराने की इजाज़त दे दी। मेरे जाने की बात उसे कुछ अच्छी नहीं लगी। फिर भी उसने वादा किया कि वह मुझे जल्दी ही अपने देश लौटने की इजाज़त दे देगा।

उधर लिलिपुट का बादशाह शुरू में तो यह सोचता रहा कि मैं अपने वादे के मुताबिक जल्दी वापस लौट आऊंगा, लेकिन जब काफी दिनों तक मैं लौट नहीं सका तो उसे कुछ शक होने लगा। मेरे दुश्मन भी उसे भड़काने लगे।

अन्त में अपने दरबारियों और मेरे दुश्मनों से राय लेने के बाद उसने एक आदमी को ब्लेफुस्कू के बादशाह के पास भेजने का निश्चय किया। उसने दूत को ज़रूरी कागज़ात दिए, जिसमें ब्लेफुस्कू के बादशाह के नाम एक चिट्ठी भी थी। इस चिट्ठी में पहले तो ब्लेफुस्कू के बादशाह की वीरता और दयालुता की बड़ी प्रशंसा की गई थी और दोनों देशों की मित्रता पर ज़ोर दिया गया था। अन्त में लिखा था कि एक 'इंसानी पहाड़', जो हमारे देश का निवासी है हमारे यहां से भागकर आपके देश में चला आया है। असल में वह सज़ा से बचकर भागना चाहता है। उसके इस अपराध के लिए मैंने दया करके सिर्फ उसकी आंख फोड़ देने की सज़ा दी है। अगर दो घण्टे के भीतर वह वापस नहीं लौट आया तो उसे देशद्रोही करार दिया जाएगा। उसे जो खिताब दिया गया है वह भी वापस ले लिया जाएगा। अन्त में लिलिपुट के बादशाह ने ब्लेफुस्कू के बादशाह से प्रार्थना की थी कि अगर वह सीधे से नहीं आता तो उसे हाथ-पैर बांधकर यहां भेजा जाए।

इस चिट्ठी पर ब्लेफुस्कू का बादशाह तीन दिन तक विचार करता रहा। अन्त में अपने दरबारियों की राय से उसने एक पत्र

लिलिपुट के बादशाह के नाम भिजवाया। पहले तो उसमें उसने धन्यवाद दिया और उसकी प्रशंसा की और अन्त में लिखा, "इंसानी पहाड़ के हाथ-पैर बांधकर उसे वापस लिटिपुट भेजना तो एक बिल्कुल असंभव कार्य है। हालांकि उसने हमारे जहाज़ी बेड़े को बर्बाद किया और हमारे चुने हुए जहाज़ों को चुराकर लिलिपुट भेज दिया, लेकिन फिर भी हम उसके बहुत आभारी हैं।" उसे मैंने दोनों देशों के बीच शांति-संधि करने में जो मदद दी थी उसके बारे में उसने खास तौर से लिखा था।

अपनी चिट्ठी में उसने यह भी लिखा था कि मुझे एक बहुत बड़ी नाव मिल गई है और मैंने मरम्मत करके उसे यात्रा के योग्य बना लिया है। इसलिए बहुत जल्दी ही मैं वहां से अपने देश के लिए रवाना हो जाऊंगा। इस तरह दोनों राज्य मेरे चले जाने के बाद सुखपूर्वक रह सकेंगे।

यह जवाब लेकर लिलिपुट का दूत वापस अपने देश लौट गया। उसके जाने के बाद ही ब्लेफुस्कू के बादशाह ने मुझे सारी बातें बताईं, लेकिन साथ ही यह भी कहा कि अगर मैं उसके देश में रहूं और उसकी नौकरी कर लूं तो वह मेरी हिफाज़त की पूरी कोशिश करेगा। लेकिन मैं इन राजा-नवाबों के झगड़े से परेशान हो चुका था। अब मैं इनकी बातों पर विश्वास नहीं कर पाता था, इसलिए मैंने उससे क्षमा मांगी। इसके अलावा, मैंने उससे कहा कि सौभाग्य से मुझे अपनी यात्रा के लायक एक नाव भी मिल गई है इसलिए अब मुझे वहां से चला जाना चाहिए।

काफी सोच-विचार के बाद बादशाह इसके लिए राज़ी हो गया। उस देश के बड़े-बूढ़े और बादशाह के लगभग सभी दरबारी यह चाहते थे कि जितनी जल्दी मैं वहां से चला जाऊं उतना ही अच्छा है। इसलिए उन्होंने मेरी काफी मदद की। मेरी नाव के लिए दो बड़ी-बड़ी पालें बनाने के काम में करीब पांच सौ आदमी जुट पड़े। मुझे अपने काम के लायक रस्सियां तैयार करनी पड़ीं। उनकी रस्सियां एक मोटे धागे के बराबर ही

होती थीं। इसलिए मैंने उनकी दस-बीस और कभी-कभी तीस-तीस रस्सियां लेकर आपस में बंटीं और उनसे मोटी रस्सियां तैयार कीं।

अब मुझे एक लंगर की ज़रूरत थी। बहुत खोजने के बाद मुझे एक बड़ा भारी पत्थर मिल गया, इसीका मैंने लंगर बना लिया। राज्य के सबसे बड़े पेड़ों को काटकर बड़ी मुश्किल से मैंने अपनी नाव के लिए मस्तूल और डांड़ वगैरह तैयार किए। तीन सौ गायों को मारकर उनकी चर्बी मुझे अपनी नाव में लगाने के लिए दी गई। इस सारे काम में राज्य के सबसे तगड़े मज़दूर बादशाह की आज्ञा से मेरी मदद करते थे।

करीब एक महीने में तैयारी पूरी हुई और मैं बादशाह से आखिरी मुलाकात करने पहुंचा। बादशाह पूरे शाही परिवार के साथ महल के बाहर आकर मुझसे मिला। ज़मीन पर लेटकर मैंने बादशाह का हाथ चूमा। बेगम और शाहज़ादे भी मुझसे मिलने आए। बादशाह ने मुझे अपने देश के रुपयों से भरी हुई पचास थैलियां दीं और अपना एक बड़ा-सा चित्र भी दिया। इन चीज़ों को मैंने अपने एक दस्ताने में लपेटकर हिफाजत से रख लिया।

फिर चार सौ रसोइयों ने मिलकर मेरे लिए खाना तैयार किया। इसके अलावा करीब एक सौ बैल और तीन सौ भेड़ों को भूनकर मेरी नाव में लाद दिया गया। कई पीपे शराब भी रख दी गई। इनके अलावा मैंने छः गायें और दो बैल ज़िन्दा अपनी नाव पर चढ़ाए। इन्हें मैं अपने देश ले जाना चाहता था। इनके खाने के लिए मैंने काफी चारा और दाना-पानी नाव में रख लिया।

उस देश के आठ-दस आदमियों को मैं नमूने के लिए ले आना चाहता था लेकिन बादशाह इसके लिए राज़ी नहीं हुआ। उसने मेरी जेबों की तलाशी ली और किसी आदमी को वहां से चुराकर ले जाने की सख्त मनाही कर दी।

इस तरह पूरी तैयारी करके मैं 24 दिसम्बर, सन् 1701 को छः बजे सवेरे ब्लेफुस्कू द्वीप से अपने देश के लिए रवाना हुआ। इन अजीब-से बौनों के देशों से मुक्ति पाकर मैं बहुत प्रसन्न था। दिन-भर मैं यात्रा करता रहा। शाम को कुछ दूर जाने पर मुझे एक छोटा-सा टापू दिखाई दिया। मैंने इसी टापू पर रात बिताने का निश्चय किया। मुझे लगा कि टापू पर कोई रहता नहीं है। नाव को मैंने किनारे ही बांध दिया।

थोड़ा-सा खाना लेकर मैं ज़मीन पर उतर गया। खा-पीकर मैं आराम से लेट गया। सुबह जल्दी ही मेरी नींद खुली। नाश्ता करके मैं फिर से अपनी नाव में आ बैठा और आगे बढ़ा। दिन-

भर मेरी नाव आगे बढ़ती रही।

दूसरे दिन करीब तीन बजे दोपहर मुझे कुछ दूरी पर किसी नाव की पाल दिखाई दी। मैंने आवाज़ देकर नाव को रोकना चाहा, लेकिन शायद मेरी आवाज़ उस तक पहुंच नहीं सकी। सौभाग्य से हवा इस समय उसी दिशा में बह रही थी। कुछ पास पहुंचने पर मैंने देखा कि वह एक बड़ा जहाज़ था। कुछ देर बाद जहाज़ के कप्तान ने मेरी नाव को समुद्र की लहरों पर थपेड़े खाते हुए देख लिया। उसने फौरन जहाज़ से दो-तीन नावें मेरी मदद के लिए भेजीं।

इन नावों में मेरे देश के मल्लाह थे। इतने दिनों बाद अपने जैसे इन्सानों को देखकर मैं मारे खुशी के नाच उठा। वे लोग भी मुझसे मिलकर बहुत खुश हुए। आदर-सहित उन्होंने मुझे अपने जहाज़ पर चढ़ाया। जहाज़ पर इंग्लैंड का झण्डा फहरा रहा था। मैंने सारी गायें, भेड़ और दूसरे सामान को अपनी जेब में रख लिया।

जहाज़ पर मुझे किसी बात की तकलीफ नहीं हुई। कई दिनों तक हम लोग यात्रा करते रहे। अन्त में हमारा जहाज़ इंग्लैंड के किनारे लगा। इस प्रकार लिलिपुट की मेरी रोमांचक यात्रा समाप्त हुई।

दानवों के देश में

लिलिपुट से लौटकर दो महीने तक मैं अपने देश में रहा। लेकिन शायद मेरे भाग्य में आराम नहीं लिखा था। दो महीने बाद मुझे 'एडवेंचर' नामक जहाज़ में काम मिल गया। हमारा जहाज़ हिन्दुस्तान के लिए रवाना हुआ। कुछ दिनों तक तो यात्रा बड़ी सुखपूर्ण रही। अफ्रीका महाद्वीप के किनारे-किनारे हमारा जहाज़ चलता रहा।

कुछ दिनों में हम लोग अफ्रीका के दक्षिणी सिरे पर 'गुडहोप' अन्तरीप के पास पहुंचे। यहां हमारा पीने का पानी खत्म हो गया, इसलिए हमने तय किया कि उतरकर आसपास कहीं नदी या झरने से पीने का पानी भर लिया जाए। लेकिन साथ ही हमें यह भी पता चला कि हमारे जहाज़ में एक छेद हो गया है। उसकी मरम्मत होनी ज़रूरी थी। इसलिए हमने कुछ दिनों के लिए वहीं पड़ाव डाल दिया। जहाज़ का सारा सामान किनारे उतार दिया गया। जहाज़ की मरम्मत होने लगी।

जब जहाज़ की मरम्मत हो गई और हम लोग चलने ही वाले थे कि अचानक हमारे कप्तान की तबियत खराब हो गई। कई दिनों तक वह बीमार रहा, इसलिए हमें फिर कुछ दिनों के लिए यात्रा रोक देनी पड़ी। इस तरह मार्च के अन्त तक हमें वहीं रुकना पड़ा।

हमने फिर अपनी यात्रा आरम्भ की। मैडागास्कर जल-डमरूमध्य तक हमारी यात्रा बड़ी आराम से हुई। लेकिन जब

हम उस द्वीप के उत्तर की ओर बढ़े तो एक बड़े-से तूफान में फंस गए। हवा रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। पहले तो हवा उत्तर से पश्चिम की ओर बहती रही, लेकिन करीब बीस दिन के बाद हवा ने अपनी दिशा बदल दी और हम कुछ पूर्व की ओर बढ़ने लगे। हवा के विरुद्ध जाना हमारे लिए संभव नहीं था। ऐसी स्थिति में रास्ता भूल जाना बहुत आसान होता है। हमारा जहाज़ भी अब तूफानी हवा के आसरे था। वह भटकता हुआ न मालूम कहां जा पहुंचा!

जहाज़ के सबसे ऊंचे मस्तूल पर एक आदमी हमेशा पहरा दिया करता था। उसका काम था कि अगर वह ज़मीन को देखे तो फौरन हमें सूचित करे। अचानक एक दिन उसे ज़मीन दिखाई दी। फौरन कप्तान ने जहाज़ को उसी ओर मोड़ दिया। बड़ी मुश्किल से हमारा जहाज़ किनारे लगा। लेकिन वह बड़ी अजीब जगह थी। वहां न हमें कोई नदी मिली और न झरना मिला। आस-पास काफी दूर तक बस्ती का कोई निशान नहीं मिला। पीने के पानी की तलाश में हमारे आदमी इधर-उधर भटकने लगे।

मैं भी इधर-उधर घूमने लगा। करीब एक मील तक मैं अकेला ही आगे बढ़ गया, लेकिन पहाड़ और पत्थर के अलावा मुझे और कुछ नज़र नहीं आया। सिर्फ कुछ दो-चार ऊंचे-ऊंचे पेड़ थे। पहले तो मेरा मन हुआ कि उनपर चढ़कर देखूं, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मैं वापस लौटने लगा।

जब मैं लौटकर समुद्र के किनारे आया तो मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि मेरे साथी मुझे किनारे ही छोड़कर नाव में बैठकर तेज़ी से जहाज़ की ओर भाग रहे हैं। मैंने उन्हें आवाज़ देनी चाही। लेकिन तभी अचानक मैंने देखा कि एक बहुत बड़ा आदमी पैदल ही समुद्र में आगे बढ़कर उस नाव का पीछा कर रहा है।

यह आदमी देखने में इतना लम्बा-चौड़ा था कि बिलकुल दैत्य ही मालूम पड़ता था। समुद्र का पानी सिर्फ उसके घुटनों

तक ही पहुंच पाता था। उसे देखकर मेरी घिग्घी बंध गई और मैं मारे डर के चिल्ला नहीं सका। लेकिन कुछ दूर जाकर उसे रुक जाना पड़ा, क्योंकि वहां समुद्र में बहुत ही नुकीली चट्टानें निकली हुई थीं। इन चट्टानों की वजह से वह आसानी से आगे नहीं बढ़ पा रहा था। मौका देखकर मेरे साथी नाव को तेज़ी से खेते हुए दूर निकल गए।

अब मैं अकेला रह गया। मैं भी जान बचाकर उलटे पैरों भागा। भागते-भागते मैं एक ऊंची पहाड़ी पर चढ़ गया। यहां से मैंने देखा कि उस जगह खेती-बाड़ी होती थी। दूर तक लम्बे-लम्बे खेत चले गए थे। लेकिन एक चीज़ को देखकर मुझे बड़ा
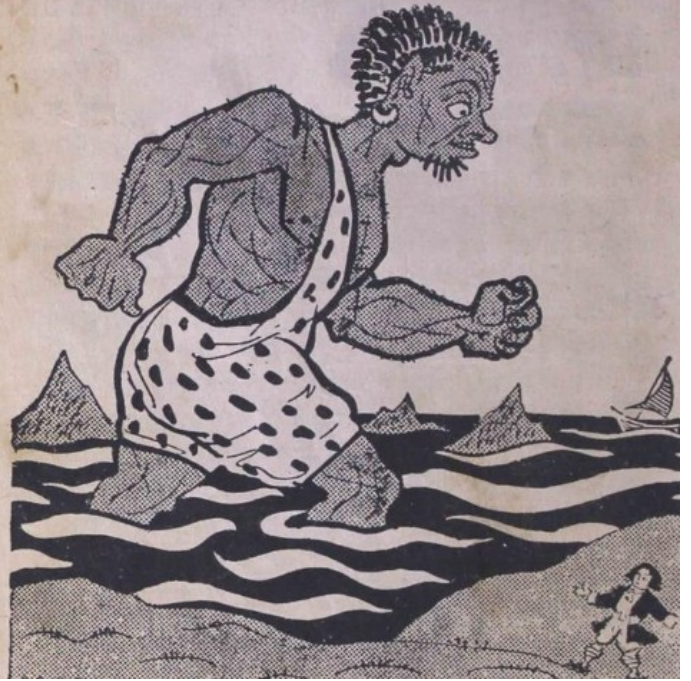
आश्चर्य हुआ। वहां घास बहुत लम्बी थी। आसपास कहीं भी मैंने बीस फुट से कम लम्बी घास नहीं देखी। चलते-चलते मैं जौ के खेत में पहुंचा। वहां से एक बहुत बड़ी सड़क जाती थी, जो उस दैत्याकार आदमी के लिए पगडंडी के समान थी। आसपास जौ के पौधे थे जो करीब चालीस फुट लम्बे थे।

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं कहां आ पहुंचा हूं। यहां की सब चीज़ें बड़ी आश्चर्यजनक थीं। हर चीज़ अपने साधारण रूप से कई गुनी बड़ी थी। यहां के पेड़ भी इतने ऊंचे थे कि उनकी फुनगी मुझे दिखाई ही नहीं देती थी। कोई एक घण्टे तक चलते रहने के बाद मैं उस खेत के दूसरे सिरे पर पहुंचा। खेत के आसपास करीब सौ फुट ऊंची झाड़ी का एक घेरा बना हुआ था।

एक खेत से दूसरे खेत में जाने के लिए एक पुलिया बनी हुई थी जिसमें तीन सीढ़ियां थीं। लेकिन मैं इस पुलिया को पार नहीं कर सका, क्योंकि एक-एक सीढ़ी करीब छह फुट ऊंची थी। सबसे ऊंचा पत्थर ज़मीन से बीस फुट ऊंचा था, इसलिए मैं झाड़ी ही में कोई रास्ता खोजने की कोशिश करने लगा। अचानक मैंने देखा कि वह दैत्याकार आदमी अपने जैसे ही एक दूसरे आदमी के साथ पुलिया की तरफ आ रहा है।

उसकी लम्बाई किसी गिरजाघर के गुम्बद से भी ज़्यादा रही होगी। वह एक बार में लगभग दस-दस गज़ के कदम रखता था। उसे देखकर मुझे आश्चर्य हुआ और बहुत डर भी लगा। मैं भागकर जौ के पौधों के पीछे छिप गया। मैंने देखा कि वह आदमी पुलिया पर खड़ा हो गया और वहां से पासवाले खेत में अपने एक साथी को आवाज़ देने लगा। उसकी आवाज़ ऐसी थी जैसे बादल गरज रहे हों।

उसकी आवाज़ सुनकर उसके जैसे ही विशाल डीलडौल वाले सात और आदमी वहां चले आए। उनके हाथों में अनाज काटने के बड़े-बड़े हंसिए थे। ये लोग, जो बाद में आए थे, ज़रा फटे-पुराने कपड़े पहने थे। उनकी पोशाक उस आदमी की तुलना

में बिलकुल घटिया थी जो पुलिया पर खड़ा था और उन्हें आवाज़ दे रहा था। वे शायद उसके नौकर थे। वे लोग जाकर अनाज काटने लगे। एक-एक झटके में वे कई पौधे काट डालते थे। उनमें से कुछ के पास बहुत बड़े-बड़े खांचे थे। कुछ लोग अनाज काटते थे और कुछ उन्हें खांचों से बटोरकर एक तरफ ढेर करते जाते थे।

मैं उनके हंसियों की मार से बचने के लिए इधर-उधर दुबकता रहता था। कभी-कभी तो वे मेरे बिलकुल पास आ जाते थे, तब मुझे और पीछे भागना पड़ता था। पीछे हटते-हटते मैं ऐसी जगह आ गया जहां कुछ पौधे आंधी-पानी की मार से ज़मीन पर लेट गए थे। अब मेरे लिए और पीछे हटना मुश्किल था, क्योंकि ज़मीन पर झुके हुए पौधे आपस में बुरी तरह उलझ गए थे। जौ की कुछ बालियां ज़मीन पर पड़ी थीं, लेकिन वे भी इतनी बड़ी थीं कि उनके कांटे मेरे शरीर में चुभ जाते थे और मेरे कपड़ों को फाड़ डालते थे।

लेकिन अभी मज़दूर मुझसे काफी दूर थे। मैं भागते-भागते बुरी तरह थक गया था। मैं जौ के एक पौधे के तने का सहारा लेकर वहीं बैठ गया। मुझे लगा कि अब मृत्यु बहुत समीप है। मुझे अपनी पत्नी की और अपने बच्चों की याद आई। मुझे यह सोचकर बड़ा अफसोस होने लगा कि मेरे मर जाने पर मेरी पत्नी विधवा हो जाएगी और बच्चे अनाथ हो जाएंगे। मुझे अपने आप पर भी बहुत गुस्सा आ रहा था; मैं फिर से क्यों समुद्री यात्रा के लिए निकला! मेरे मित्रों ने मुझे यात्रा पर जाने से रोका था, लेकिन मैंने उनकी बात नहीं मानी।

फिर मुझे लिलिपुट के निवासी याद आए, जो मुझे दुनिया का सबसे आश्चर्यजनक प्राणी मानते थे। वहां मैंने ऐसे-ऐसे काम किए थे जो वहां के इतिहास में हमेशा के लिए अमर हो जाएंगे, जैसे उनके सबसे बड़े पचास जहाज़ों को एकसाथ खींच लाना वगैरह। और यहां बिलकुल उल्टी ही बात थी। यहां के लोगों के

बीच में उतना ही बौना और छोटा-सा लगता था, जितना कि लिलिपुट का कोई निवासी मेरे देशवासियों के बीच लगता। ये लोग मेरे लिए 'इन्सानी पहाड़' जैसे थे। इनमें से कोई भी मुझे उठाकर अपने मुंह में रख सकता था। मैं इनके लिए एक कौर के बराबर भी न था।

मैं इसी तरह सोच रहा था कि इतने में उनमें से एक मज़दूर मेरे पास आकर अनाज काटने लगा। उसका एक बड़ा भारी चट्टान जैसा पैर मुझसे सिर्फ दस गज़ की दूरी पर था। उसका हंसिया बड़ी तेज़ी से चल रहा था। किसी भी क्षण वह मुझे अपने पैर-तले रौंद सकता था या अपने हंसिये से मेरे दो टुकड़े कर

सकता था। इसलिए जैसे ही उसने कदम बढ़ाया, मैं मारे डर के ज़ोर से चीख पड़ा।

यह विशालकाय प्राणी मेरी चीख से कुछ चौंका और पीछे हट गया। फिर वह झुककर बहुत गौर से मुझे देखने लगा। उसका चेहरा एक बड़े बादल की तरह मुझपर झुका हुआ था। अन्त में उसने बहुत सावधानी से मेरी ओर हाथ बढ़ाया, जैसे कोई किसी अजीब-से जानवर को छूने से डरता हो कि यह कहीं काट न ले। मैं घबराकर पीछे हटने लगा। लेकिन उसने अपने अंगूठे और उंगली के बीच मुझे पकड़कर ऊपर उठा लिया।

ऊपर उठाकर वह मुझे अपनी आंखों से तीन गज़ की दूरी पर रखकर गौर से देखने लगा। उसका विरोध करना बेकार समझकर मैंने ज़रा भी हाथ-पैर नहीं फेंके। वह मुझे ज़मीन से साठ फुट ऊपर उठाए था। उसने अपनी उंगलियों में मुझे कसकर दबा रखा था। ऐसा लगता था, जैसे किसीने मुझे कसकर संडासी में दबा रखा हो।

अन्त में धीरे-धीरे मेरी घबराहट कुछ कम हुई और मैंने उस दैत्य से बात करने का निश्चय किया। आसमान की ओर आंखें उठाकर और साथ बांधकर मैंने बहुत ही विनम्रता से उससे प्रार्थना की कि मुझे नीचे उतार दो। एक क्षण के लिए तो मुझे डर लगा कि कहीं यह नाराज़ होकर ज़मीन पर न पटक दे। लेकिन इस समय मेरे भाग्य ने मेरा साथ दिया। नाराज़ होने के बजाय वह आश्चर्य से मेरी ओर देखने लगा। लेकिन मेरी कोई बात उसकी समझ में नहीं आई।

इधर उसकी फौलादी पकड़ के कारण मेरी जान निकल रही थी। बहुत कोशिश करके भी मैं उसे अपनी बात नहीं समझा सका, तो मेरी आंखों में आंसू आ गए। मैं धीरे-धीरे सिसकने और आंसू बहाने लगा। उसकी उंगली और अंगूठे पर सिर पटक-पटककर मैं उसे बताने लगा कि मुझे बहुत दर्द हो रहा है।

शायद उसने मेरी बात समझ ली, क्योंकि मुझे आहिस्ते से

उसने अपने कोट की जेब में रख लिया। फिर भागता हुआ अपने मालिक के पास पहुंचा। उसका मालिक वही था जिसे मैंने समुद्र के किनारे देखा। उसने पास ही खड़ी घास से एक तिनका तोड़ा। उन लोगों के लिए वह तिनका ही था, लेकिन उसकी मोटाई हमारे बांस के बराबर थी। इस तिनके से वह मेरे कोट को उलटने की कोशिश करने लगा। उसने सोचा कि वह मेरे शरीर का ही एक अंग है।

फिर फूंक मारकर उसने मेरे बालों को उड़ाने की कोशिश की, ताकि मेरा चेहरा अधिक सफाई से देखा जा सके। उसकी फूंक क्या थी जैसे आंधी चल रही हो। फिर उसने अपने नौकरों को बुलाया और उसने पूछा कि क्या ऐसे प्राणी को उन्होंने और भी कभी कहीं देखा है। लेकिन कोई भी उसे यह नहीं बता सका कि मैं किस जाति का जीव हूं और कहां से आया हूं।

इसके बाद उसने धीरे-धीरे मुझे ज़मीन पर रख दिया। लेकिन मैं फौरन उठकर इधर-उधर टहलने लगा। मैं उन लोगों को यह दिखाना चाहता था कि मैं भागना नहीं चाहता हूं। मैंने अपने सिर से हैट उतारा और झुककर उस किसान को सलाम किया। वे लोग अब घेरा बांधकर मेरे आसपास बैठ गए और मुझे देखने लगे। मैं उस किसान के सामने घुटनों के बल गिर पड़ा और हाथ जोड़कर बहुत ज़ोर-ज़ोर से प्रार्थना करने लगा कि मुझे छोड़ दिया जाए।

मैंने अपनी जेब से अशर्फियों की एक थैली निकाली और उसे भेंट कर दी। उसने थैली को अपनी हथेली में रखा और आंख के पास ले जाकर बहुत देर तक देखता रहा। उसने अपने कोट में से एक पिन निकाली और उसीसे मेरी थैली को अच्छी तरह उलट-पलट कर परखा। लेकिन उसकी समझ में कुछ नहीं आया। इसपर मैंने उसे इशारा किया कि वह अपना हाथ नीचे ज़मीन पर ले आए। फिर मैंने थैली खोली और उसके सिक्के उसकी हथेली पर उलट दिए। उसमें स्पेन की छः सोने की मुहरें थीं

और कुछ छोटे सिक्के थे।

चमकते हुए सिक्कों को देखकर किसान को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अपनी एक उंगली पहले होंठों से लगाकर गीली की और फिर सबसे बड़ी मोहर को उसमें चिपकाकर आंखों के पास ले गया। लेकिन शायद फिर भी उसकी समझ में कुछ नहीं आया। उसने मुझसे इशारे में कहा कि इस थैली को अपने पास ही रखूं। मैंने बार-बार उसे भेंट देने की कोशिश की, लेकिन फिर थैली को अपनी जेब में ही रखना उचित समझा।

वह किसान अब तक शायद यह समझ चुका था कि मैं एक भला प्राणी हूं और उसे किसी तरह का नुकसान पहुंचाने का मेरा इरादा नहीं है। वह बार-बार मुझसे कुछ कहना चाहता था। उसकी आवाज़ ऐसी थी जैसे बादल गरज रहे हों। मेरे कान फटे जाते थे। उसकी आवाज तेज़ थी, लेकिन उसके शब्द अच्छी तरह पहचाने जा सकते थे। पर मैं उसकी भाषा ही नहीं जानता था और न वह मेरी भाषा जानता था। मैं खूब ज़ोर से चिल्ला-चिल्लाकर उसे ज्वाब देता था और एक के बाद एक कई भाषाओं में बोलता था। लेकिन फिर भी उसकी समझ में कुछ नहीं आता था। वह अपना बड़ा-सा कान मुझसे दो गज़ की दूरी पर लाकर मेरी बात सुनने की कोशिश करता था। लेकिन यह सारी कोशिश बेकार गई। हम दोनों एक-दूसरे की बात समझ नहीं सके।

अन्त में उसने अपने मज़दूरों को काम पर वापस भेज दिया। फिर उसने अपनी जेब से एक रूमाल निकाला और तह करके अपनी बाईं हथेली पर फैला दिया। हथेली को ज़मीन पर रखकर उसने मुझे उसपर चढ़ जाने का इशारा किया। उसकी हथेली एक फुट मोटी थी। मैं उसपर चढ़ गया और गिरने के डर से रूमाल पर लेट गया। उसने भी रूमाल का बाकी भाग अच्छी तरह मेरे आसपास लपेट दिया और फिर वह मुझे अपने घर ले चला।

घर जाकर उसने अपनी बीवी को आवाज़ देकर बुलाया और उसके सामने मुझे रख दिया। लेकिन वह मूर्ख स्त्री मुझे देखकर इस तरह चीखी और पीछे हट गई कि जैसे मैं कोई बहुत ही ज़हरीला जन्तु होऊं। हमारे यहां की औरतें जैसे मेढक या मकड़ी को देखकर चीख पड़ती हैं, उसी तरह वह भी मुझे देखकर घबरा गई। लेकिन जब धीरे-धीरे उसे मेरा स्वभाव मालूम हो गया और अपने पति को उसने इशारों में मुझसे बातें करते देखा तो उसकी घबराहट कुछ कम हुई और वह मुझे ज़्यादा पास से देखने लगी। अब उसके चेहरे पर कुछ हंसी भी दिखाई दे रही थी।

दोपहर के बारह बजे उनका एक नौकर मेरे लिए खाना लाया। वह एक किसान के लायक ही सादा-सा भोजन था—एक तश्तरी में उबला हुआ गोश्त। लेकिन वह इतनी मात्रा में था, इसका अन्दाज़ इसीसे लगाया जा सकता है कि तश्तरी का व्यास चौबीस फुट था। भोजन के लिए किसान और उसकी पत्नी के साथ-साथ उसके बच्चे और उसकी बूढ़ी दादी, सभी लोग पास आकर बैठ गए। किसान ने मुझे अपने से कुछ दूर टेबल पर बिठा दिया। उसकी यह टेबल ज़मीन से तीन फुट ऊंची थी।

इतनी ऊंची टेबल पर बैठे-बैठे मुझे डर लग रहा था कि कहीं मैं नीचे न गिर पड़ूं। किसान की बीवी ने थोड़ा-सा गोश्त और रोटी का टुकड़ा एक छोटी तश्तरी में मेरे आगे रखा। मैंने झुककर उसे सलाम किया। मुझे खाते देखकर वे लोग बड़े खुश हुए और गौर से मुझे देखने लगे। फिर उसने अपनी नौकरानी को आवाज़ दी। वह एक बड़े भारी प्याले में मेरे लिए शराब भरकर ले आई।

वह प्याला एक बड़ी भारी बाल्टी के बराबर था। बड़ी मुश्किल से इसे मैंने दोनों हाथों में उठाने की कोशिश की, लेकिन नहीं उठा सका। फिर मैंने झुककर उसका अभिवादन किया और खूब ज़ोर से चीखकर सब लोगों के स्वास्थ्य की कामना की।

मेरी बोली सुनकर वे सब ज़ोरों से हंस पड़े। उनके हंसी के शोर से मेरे कान फटने लगे। मैंने उस प्याले में मुंह डालकर शराब के कुछ घूंट पिए। यह मीठी शराब थी और स्वाद भी उसका बुरा नहीं था।

फिर किसान ने मुझे अपने पास आने का इशारा किया। मैं उसकी ओर बढ़ा तो रोटी के एक छोटे-से टुकड़े से टकराकर मुंह के बल टेबल पर गिर गया। लेकिन मैं फौरन ही खड़ा हो गया। कुछ चोट भी मुझे लगी, लेकिन मैंने उसकी परवाह नहीं की। मुझे गिरते देखकर वे लोग कुछ घबराए, लेकिन मैंने अपना हैट हिलाकर प्रकट किया कि मुझे कोई चोट नहीं आई है।

जब मैं अपने मालिक के पास जा ही रहा था कि इतने में उसके छोटे लड़के ने, जो बीच में बैठा था, मुझे पैरों के बल उठाकर हवा में टांग दिया। मैं बुरी तरह कांपने लगा। अगर वह वहां से छोड़ देता तो टेबल पर गिरते ही मेरा सिर फट जाता।

लेकिन मालिक ने मुझे बचा लिया। उस किसान को अब मैं आगे से अपना मालिक ही कहूंगा। उसने लड़के के हाथ से मुझे छीनकर टेबल पर रख दिया और लड़के को एक धौल जमाई, और डांटकर टेबल से दूर चले जाने का हुक्म दिया।

लेकिन मुझे डर लगा कि कहीं लड़का नाराज़ होकर बाद में मुझसे बदला न ले। जैसे हमारे बच्चे चिड़िया, खरगोश, बिल्ली या कुत्ते के बच्चों को छेड़ना और उनसे खेलना पसन्द करते हैं, उसी तरह कहीं वह भी खेल-खेल में मुझे तंग न करे, इसलिए मैंने घुटने के बल झुककर इशारे से अपने मालिक से प्रार्थना की कि वह अपने लड़के को माफ कर दे। मालिक मेरी बात समझ गया। उसने लड़के को माफ कर दिया। वह फिर से आकर अपनी जगह बैठ गया। मैंने जाकर लड़के का हाथ चूम लिया। उसके पिता ने अपने हाथ से बहुत आहिस्ता से मुझे थपथपा दिया।

खाना खाते समय मेरी मालकिन की पालतू बिल्ली उछल कर उसकी गोद में आ बैठी। मैंने घूमकर देखा तो वह अपनी

देह चाट रही थी। इससे ऐसी आवाज़ हो रही थी जैसे हज़ारों जुलाहे अपने करघों पर काम कर रहे हों। वह शेर से तिगुनी थी। मेरी मालकिन उसे प्यार से थपथपाती रही और खाना खिलाती रही।

बिल्ली को देखकर में इतना डरा कि तेज़ी से भागता हुआ टेबल के दूसरे किनारे जा खड़ा हुआ। मैं अब बिल्ली से पचास फुट दूर खड़ा था, लेकिन फिर भी मारे डर के कांप रहा था। वह एक झपट्टे में ही मुझे साफ कर सकती थी। लेकिन बाद में मुझे लगा कि इससे डरने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि जब मालिक ने मुझे उठाकर बिल्ली के करीब रखा तो उसने मेरी ओर देखा तक नहीं।

मैंने कई बार लोगों को कहते सुना है और अपनी यात्राओं के अनुभव से देखा है कि किसी जानवर से डरकर भागना ठीक नहीं होता। इससे वह हमारा पीछा करता है और हमला करने से नहीं चूकता। लेकिन अगर बिना डरे, साहस करके उसका मुकाबिला किया जाए और उसके सामने ही खड़ा रहा जाए, तो अक्सर ऐसा होता है कि जानवर को हमला करने की हिम्मत नहीं होती। इसलिए मैंने भी यहां हिम्मत से काम लेना उचित समझा। मैं शान से बिल्ली के मुंह के आगे टहलता रहा। यहां तक कि एक बार मैं उसके दो फुट पास तक चला गया। इसपर वह चौंककर पीछे हट गई, जैसे वह मुझसे डर गई हो।

मालिक के कुत्तों से मुझे डर नहीं लगा, हालांकि वे भी बहुत भारी-भरकम थे। उनमें एक तो काफी मोटा-ताज़ा, एक हाथी के बराबर था। दूसरा कुछ दुबला-पतला और छोटा-सा था, लेकिन वह भी हमारे किसी ऊंट से बड़ा ही था। दो कुत्ते मकान के बाहर घूम रहे थे। वे भी उतने ही बड़े थे।

जब भोजन समाप्त हो गया तो एक दाई एक छोटे-से बच्चे को अपनी गोद में उठाए हुए वहां आई। बच्चा करीब एक साल का रहा होगा। उसने मुझे फौरन देख लिया और ज़ोरों से चीखना

शुरू किया। वह मुझे कोई खिलौना समझ रहा था।

मालकिन ने मुझे उठाकर उसके हाथों में दे दिया। उसने दोनों हाथों से पकड़कर मुझे थोड़ी देर तक देखा और फिर मेरा सिर अपने मुंह में रख लिया। इसपर मैं इतनी ज़ोर से चीखा कि वह डर गया। उसने मुझे टेबल पर फेंक दिया।

टेबल पर गिरने से मेरी गर्दन ही टूट गई होती, लेकिन मालकिन ने मुझे बीच में ही झेल लिया। बच्चा अब भी चीख रहा था। दाई एक झुनझुना बजाने लगी और उसे चुप कराने की कोशिश करने लगी। झुनझुने की आवाज़ से मेरे कान फटे जा रहे थे, ऐसा लगता था जैसे हज़ारों घण्टे बज रहे हों।

खाना खत्म होने के बाद मेरा मालिक बाहर खेत में चला गया। लेकिन जाते-जाते वह अपनी बीवी को मेरी देखभाल करने के लिए कहता गया। उसके इशारे से और बात करने के ढंग से मैंने समझ लिया कि वह मुझे अधिक से अधिक आराम देना चाहता है। अब तक मैं काफी थक गया था और मुझे नींद आ रही थी। मेरी मालकिन ने समझ लिया कि मैं सोना चाहता हूं। उसने मुझे अपने बिस्तर पर लिटा दिया, जो बहुत लम्बा-चौड़ा था। फिर अपना रूमाल मुझपर ओढ़ा दिया। यह रूमाल भी बहुत लम्बा था और दरी की तरह खुरदरा था।

मैं करीब दो घण्टे तक सोता रहा। नींद में मैं अपने घर के सपने देखता रहा। सपने में मैं अपनी पत्नी और अपने बच्चों से बातें करता रहा। लेकिन जब मेरी नींद खुली तो मुझे यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि मैं एक अजनबी देश में पड़ा हुआ हूं। पहले मैंने उस कमरे को ठीक से देखा नहीं था, क्योंकि मुझे नींद आ रही थी। अब मैंने उसे देखा तो मैं उसकी लम्बाई-चौड़ाई देखकर हैरान रह गया। कमरा करीब दो-तीन सौ फुट चौड़ा और दो सौ फुट ऊंचा था। मालकिन के जिस पलंग पर मैं सो रहा था वह खुद साठ फुट चौड़ा था। ज़मीन से उसकी ऊंचाई करीब पच्चीस फुट थी।

मेरी मालकिन घर का काम देखने के लिए बाहर चली गई थी और मुझे कमरे में बन्द करती गई थी। थोड़ी देर में मैंने देखा कि वहां न मालूम कहां से दो बड़े-बड़े चूहे निकल आए और कुछ सूंघते हुए परदों पर चढ़ने-उतरने लगे। फिर वे दोनों मेरे बिस्तर पर चढ़ आए और इधर-उधर दौड़ने लगे। वे चूहे एक जंगली सूअर के बराबर मोटे थे। उनमें से एक मेरे चेहरे के पास आ गया।

मैं चीख मारकर उठ बैठा। मैंने फौरन अपनी तलवार निकाल ली। लेकिन ये चूहे बड़े ढीठ थे। तलवार से डरकर भागने के बजाय उन दोनों ने मिलकर मुझपर हमला कर दिया। उनमें से एक मेरी गरदन पर चढ़ आया। लेकिन इसके पहले कि वह मेरे गले में अपना दांत चुभाए, मैंने उसे मार डाला। उसका दांत हाथी के दांत जैसा लम्बा और बहुत पैना था। तलवार के दो-तीन हाथ में ही मैंने उसका काम तमाम कर दिया।

अपने साथी का यह हाल देखकर दूसरा चूहा जान बचाकर भागा। लेकिन मैंने उसका भी पीछा किया और उसकी पीठ पर भी कसकर तलवार का एक हाथ जमा दिया। वह भाग तो गया, लेकिन उसकी पीठ पर एक बड़ा भारी घाव हो गया था, जिससे खून बहने लगा। खून पूरे कमरे में फैल गया।

चूहों को मारकर मैं ज़रा सुस्ताने के लिए अपने बिस्तर पर टहलने लगा। थोड़ी देर में जब मेरी घबराहट कुछ कम हुई तो मैंने देखा कि सचमुच मैंने इन चूहों को मारकर बड़ी बहादुरी का काम किया था। जो चूहा बिस्तर पर मरा पड़ा था, वह देखने में बड़ा डरावना था। वह सात फुट लम्बा और कम से कम चार फुट मोटा था। उसकी पूंछ बारह-चौदह फुट लम्बी थी।

कुछ देर बाद मेरी मालकिन कमरे में आई। उसने जब मुझे खून से लथपथ देखा तो दौड़कर मुझे अपने हाथ में उठा लिया। मैंने पहले उस मरे हुए चूहे की ओर इशारा किया और फिर

मुस्कराकर यह प्रकट किया कि मुझे कोई चोट नहीं आई है। यह देखकर वह बड़ी खुश हुई। उसने फौरन नौकरानी को बुलाया। नौकरानी ने चूहे को एक चिमटे से पकड़कर खिड़की से बाहर फेंक दिया।

मालकिन ने मुझे एक टेबल पर बिठा दिया। मैंने उसे खून में सनी हुई तलवार दिखाई। फिर तलवार को अपने कोट से पोंछ कर मैंने म्यान में रख लिया।

2

मेरी मालकिन की एक लड़की थी। उसकी उम्र करीब नौ साल थी। बड़ी अच्छी थी वह। अपनी गुड़िया को अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाने का उसे बहुत शौक था। सूई के काम में भी वह बड़ी रुचि लेती थी। दिन-भर कुछ न कुछ सिलती रहती थी। इस लड़की की मदद से मेरी मालकिन ने मेरे लिए एक बिस्तर तैयार किया। बच्चों के पालने में मेरा बिस्तर लगा। मुझे चूहों से बचाने के लिए पालने को छत से लटका दिया जाता था। धीरे-धीरे कोशिश करके मैं उनकी बोली भी समझने लगा था। इस-लिए अब मैं अपनी ज़रूरतें उनके सामने आसानी से प्रकट कर लेता था।

लड़की दिन-भर मुझसे खेला करती थी। वह मुझे अपनी भाषा भी सिखाती थी। जब किसी चीज़ की ओर इशारा करता था वह मुझे उसका नाम बता देती थी। इस तरह कुछ ही दिनों में मैं उन लोगों की भाषा के कई शब्द सीख गया। वह लड़की मुझे 'मेनिकिन' यानी नन्हे आदमी के नाम से पुकारती थी।

वह मेरा बहुत खयाल रखती थी। हमेशा मेरे साथ रहती थी और मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं होने देती थी। उसके कारण ही घर में या बाहर कोई मुझे छेड़ नहीं पाता था। इसके लिए मैं उसका बड़ा ऋणी हूं। जब मैं उसके साथ था तब मेरी बड़ी इच्छा होती थी कि किस तरह मैं इसके उपकारों का बदला चुकाऊं। मैं उसका बड़ा आदर करता था और हमेशा उसके

मनोरंजन के लिए तैयार रहता था। हम दोनों में बड़ी दोस्ती हो गई थी।

धीरे-धीरे पास-पड़ोस के लोगों को मालूम होने लगा कि मेरे मालिक को एक छोटा-सा जीव मिला है, जो देखने में बिल्कुल इन्सान की तरह लगता है; दो पैरों पर सीधा खड़ा होकर चलता है और तलवार चलाना जानता है। अपनी भाषा बोलता है और हमारी भाषा भी समझ लेता है। पूरे गांव में मेरी चर्चा होने लगी।

एक दिन मेरे मालिक का एक पड़ोसी मुझे देखने आया। फौरन मुझे उसके सामने एक टेबल पर रख दिया गया। मैंने झुककर मेहमान का स्वागत किया और उसकी भाषा में उसका अभिवादन किया। अपने मालिक के हुक्म पर मैंने उसे तलवार चलाकर दिखाई। वह आदमी यह सब देखकर बड़ा चकित हुआ। लोग मुझे देखने के लिए आने लगे।

उस आदमी की आंखें कुछ खराब थीं। उसने मुझे अच्छी तरह देखने के लिए अपना चश्मा निकाला और उसे पहना। यह देख-कर मुझे हंसी आ गई। चश्मे में से उसकी आंखें ऐसी लगती थीं जैसे दो खिड़कियों में दो बड़े-बड़े चांद चमक रहे हों। मुझे हंसते देखकर और लोग भी हंसने लगे। इसपर वह कुछ नाराज़ हो गया। वह कुछ चिड़चिड़े स्वभाव का था।

जाते-जाते उसने मेरे मालिक को राय दी कि हाट के दिन वह मुझे बाज़ार ले चले और गांववालों को मेरा तमाशा दिखाए। हाट पास के ही गांव में लगता था जो यहां से बीस मील दूर था। उन दोनों की बातचीत से मुझे ऐसा लगा कि मेरे साथ कोई दुर्घटना होने वाली है। मैं कुछ घबरा गया। मेरा मालिक यह समझ गया और बाहर जाकर उस आदमी से बातें करने लगा।

लेकिन मेरी छोटी मालकिन से उनकी बातें छिपी न रह सकीं। वह चुपचाप एक कोने में छिपकर सब कुछ सुनती रही।

जब वह आदमी चला गया, तो वह मेरे पास आकर रोने लगी। उसने मुझे उठाकर गले से लगा लिया और सिसकते हुए बताया कि ये लोग तुम्हें तंग करना चाहते हैं। उसे डर था कि बाज़ार में अगर मुझे तमाशा बनाकर खड़ा किया गया तो गंवार देहाती मुझे छू-छूकर मेरे हाथ-पैर तोड़ डालेंगे। फिर वह यह भी समझ गई थी कि मैं एक स्वाभिमानी प्राणी हूं और बाज़ार में पैसे के लिए तमाशा बनकर खड़ा होना पसन्द नहीं करूंगा।

वह रोते हुए कहने लगी, "मेरे माता-पिता ने तुम्हें मुझे खेलने के लिए दिया था। लेकिन अब वे लोग तुम्हें मुझसे छीनना चाहते हैं। पारसाल भी उन्होंने ऐसा ही किया था। उन्होंने एक मेमना मुझे खेलने के लिए दिया था। लेकिन जब वह बड़ा हो गया तो उन्होंने मुझसे छीनकर एक कसाई के हाथ बेच दिया।"

उसे दुःखी होते देखकर मुझे भी बहुत दुःख हुआ। लेकिन मन में मुझे उतना दुःख नहीं था, क्योंकि मुझे बराबर यह आशा बनी रहती थी कि किसी न किसी दिन मुझे अवश्य यहां से अपने देश लौटने का मौका मिल जाएगा और मैं अपने घर के लोगों से मिल सकूंगा। लेकिन मैंने अपनी छोटी मालकिन को यह नहीं बताया कि मैं अपने देश लौटना चाहता हूं।

अन्त में हाट का दिन आया। मेरे मालिक ने पड़ोसी की राय के मुताबिक मुझे बाज़ार ले जाने की तैयारी की। उसने मुझे एक डिब्बे में रखा। डिब्बा चारों तरफ से बन्द था। उसमें मेरे आने-जाने के लिए एक दरवाज़ा था और हवा आने के लिए कुछ छेद थे। छोटी मालकिन ने दया करके मेरे लिए डिब्बे में अपने खिलौने का गद्दा बिछा दिया था। अपने पिता के साथ वह भी बाज़ार चल रही थी।

रास्ते में मुझे बड़ी तकलीफ हुई। उनका घोड़ा एक कदम में चालीस गज़ चलता था। बाज़ार तक पहुंचते-पहुंचते मेरा पंजर ढीला हो गया। बाज़ार में पहुंचकर मेरा मालिक एक छोटी

सराय में उतरा। उसने सराय के मालिक से बात की। उसने तमाशे के लिए सारी तैयारी कर दी, आवाज़ लगाने के लिए एक नौकर का इन्तज़ाम भी हो गया।

नौकर जाकर पूरे शहर में ऐलान कर आया कि बाज़ार में एक ऐसा जानवर लाया गया है जो बहुत ही छोटा है, लेकिन देखने में बिलकुल आदमी जैसा है। उसकी लम्बाई सिर्फ छः फुट है, वह अजीब भाषा बोलता है और तरह-तरह के करतब दिखाता है।

सराय के सबसे बड़े कमरे में मुझे एक बड़ी-सी मेज़ पर रख दिया गया। मेरे मालिक की लड़की टेबल के पास ही एक नीचो

तिपाई पर खड़ी हो गई, ताकि मुझे कोई छेड़ न सके। कमरे में ज्यादा भीड़ न हो जाए, इसलिए मेरे मालिक ने एक बार में सिर्फ तीस आदमियों को ही अन्दर बुलाने का निश्चय किया।

जब तीस आदमी अन्दर आ गए तो मेरा खेल शुरू हुआ। मेरी छोटी मालकिन मुझे हुक्म देती जाती थी और मैं खेल दिखाता था। वह मुझसे सवाल पूछती थी और मैं उसके उत्तर उसीकी भाषा में देता था। मुझे अपने देश की भाषा बोलते सुनकर देखनेवाले दंग रह जाते थे। टेबल के आसपास घेरा बांधकर खड़े हुए तमाशबीनों को मैं झुककर सलाम करता था और उनके स्वास्थ्य की कामना करता था। मेरी मालकिन नें एक अंगुश्ताना मुझे दे रखा था, जिसे मैं अपने प्याले की तरह इस्तेमाल करता था। फिर मैं अपनी तलवार निकालकर उन्हें कुछ हाथ दिखाता था। मेरे मालिक ने घास का एक तिनका मुझे दे रखा था, जिसे मैं भाले की तरह फेंककर तमाशबीनों का मनोरंजन करता था।

इस तरह मुझे बारह बार तमाशा दिखाना पड़ा। मैं अब थककर चूर हो गया था। दर्शकों की हर भीड़ के सामने मुझे एक ही तरह के काम करके दिखाने पड़ते थे। लेकिन देखनेवालों की भीड़ बढ़ती ही जा रही थी। जो लोग मेरा खेल देखकर गए, उन्होंने अपनी जान-पहचान के लोगों से मेरी इतनी तारीफ की कि पूरा गांव मेरा खेल देखने के लिए उमड़ पड़ा। सराय के बाहर बहुत भीड़ जमा हो गई।

खेल देखनेवाले अक्सर मुझे छूकर देखना चाहते थे। मेरा मालिक किसीको मुझे छूने की इजाज़त नहीं देता था। जब भीड़ बढ़ने लगी तो उसने टेबल के आसपास कुछ चौकियां बिछा दीं, ताकि लोग टेबल के ज्यादा पास न आ सकें। इससे चिढ़कर एक शरारती लड़के ने मुझपर एक कंकर फेंक दिया। उसके लिए वह कंकर ही था, पर मेरे लिए वह बड़े तरबूज़ के बराबर की चट्टान थी। अगर वह मेरे सिर पर गिरता तो वहीं मेरे प्राण निकल

जाते, लेकिन सौभाग्य से वह मुझे छूता हुआ दूर जा गिरा।

इस घटना से मैं बुरी तरह घबरा गया और कांपने लगा, लेकिन यह देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि उस बदमाश लड़के को फौरन पकड़ लिया गया। उसकी खूब पिटाई हुई और फिर उसे सराय के बाहर निकाल दिया गया। मेरी छोटी मालकिन ने भी धीरज बंधाया।

मालिक ने खेल बन्द कर दिया और ऐलान किया कि अगले हाट के दिन फिर मेरा खेल होगा। शाम को हम लोग अपने गांव लौट आए। मैं तो रास्ते के सफर से और दिन-भर खेल दिखाने की कसरत से इतना थका कि तीन दिन तक मेरी तबीयत खराब रही। लेकिन घर पर भी लोग मुझे चैन नहीं लेने देते थे। दूर-दूर के लोग मेरे मालिक के घर जाते और मुझे परेशान करते। बिना मुझे देखे वे जाने का नाम ही नहीं लेते थे।

जब मेरे मालिक ने देखा कि मैं उसके लिए इतना मुनाफा कमा सकता हूं, तो उसका लालच बढ़ा। उसने मुझे लेकर अपने देश के बड़े-बड़े शहरों का चक्कर लगाने का निश्चय किया।

पहले उसने राजधानी में खेल दिखाने का तय किया। यात्रा की सारी तैयारी हुई। अन्त में उसने यात्रा शुरू की। मेरे मालिक के साथ उसकी छोटी लड़की भी चली। मैं एक डिब्बे में बन्द था, जिसे हमेशा वह अपनी गोद में लिए रहती थी। राजधानी वहां से तीन हज़ार मील दूर थी।

यात्रा लम्बी थी। मेरा मालिक बीच-बीच में आराम करता जाता था और रास्ते के शहरों और छोटे-छोटे गांवों में भी मेरा खेल दिखाना चाहता था। हम लोग सौ-सवा सौ मील से ज्यादा नहीं चलते थे।

मेरी छोटी मालकिन मेरा बड़ा ख्याल रखती थी और अपने पिता को लम्बी यात्रा करने से रोकती। वह जानती थी कि इससे मुझे तकलीफ होती है। वह अक्सर मेरे कहने पर मुझे डिब्बे से

बाहर निकालकर हवा में घुमाती थी, लेकिन ऐसे समय हमेशा मुझे एक रस्सी से बांधकर रखती थी। यात्रा करते हुए हम लोगों को दस सप्ताह हो गए। रास्ते में करीब अठारह बड़े शहरों में मेरा तमाशा हुआ। लगभग इतने ही छोटे गांवों में मुझे लोगों को दिखाया गया।

अंत में हम लोग राजधानी पहुंचे। एक सराय में डेरा डालने के बाद मेरा मालिक मकान की खोज में निकला। राजमहल के पास ही शहर की सबसे बड़ी सड़क पर उसे एक मकान मिल गया। फिर उसने शहर में मेरे आने का ऐलान करा दिया। मकान में एक बड़ा-सा कमरा था, जो करीब तीन-चार सौ फुट चौड़ा था। उसके बीच एक टेबल रखी गई जो साठ फुट चौड़ी थी। टेबल के किनारे-किनारे तीन फुट ऊंची लकड़ी की दीवार बना दी गई, ताकि मैं गिर न सकूं।

इसी टेबल पर मेरा खेल होने लगा। दिन में दस बार मुझे खेल करना पड़ता था। रोज़ भीड़ बढ़ती जाती थी। दूर-दूर से लोग मेरा खेल देखने के लिए आते थे। अब मैं उनकी भाषा खूब अच्छी तरह बोल लेता था और उनकी बात भी समझ लेता था। लोग मुझसे बात करते थे और खूब हंसते थे।

3

रोज़ मुझे इतनी मेहनत करनी पड़ती थी कि शाम तक मैं बुरी तरह थक जाता था। ज्यों-ज्यों मेरे मालिक की आमदनी बढ़ती जाती थी, उसका लालच भी बढ़ता जाता था। वह मेरे आराम की परवाह नहीं करता था, न मेरे खाने-पीने का खयाल रखता था। मुझे ठीक से खाना नहीं मिलता था। कुछ ही दिनों में मैं बहुत दुबला और कमज़ोर हो गया।

मुझे दुबला और कमज़ोर देखकर मेरे मालिक ने सोचा कि मैं कुछ ही दिनों में मर जाऊंगा। इसलिए वह और भी लालची होता गया। उसने सोचा कि जब तक यह अजीब जानवर ज़िन्दा है, तब तक ज़्यादा से ज़्यादा पैसा कमा लिया जाए। लेकिन अचानक एक दिन राजा के दरबार से एक दूत आया और उसने मेरे मालिक को हुक्म दिया कि फौरन मुझे राजमहल पहुंचाया जाए। वहां महारानी और दूसरी स्त्रियां मेरा खेल देखना चाहती थीं।

इनमें से कुछ स्त्रियां तो मेरा खेल पहले भी देख चुकी थीं। उन्होंने ही महारानी को मेरे बारे में बताया था। मेरे बारे में काफी सुनने के बाद ही महारानी ने मुझे बुला भेजा था। मेरा मालिक मुझे राजमहल ले गया।

महारानी के सामने पहुंचते ही मैंने घुटनों के बल झुककर उसे प्रणाम किया। मुझे महारानी के सामने एक टेबल पर खड़ा कर दिया गया। वह मुझसे मेरे देश के बारे में पूछने लगी।

उसने मेरी यात्राओं के बारे में पूछा। मैंने बहुत ही आदर-सहित उसके प्रश्नों का उत्तर दिया। थोड़ी ही देर में महारानी को मैंने खुश कर लिया। उसने मुझसे दरबार की सेवा में रहने को कहा। लेकिन मैंने बहुत ही अदब के साथ उसे बताया, "मैं अपने मालिक का गुलाम हूं। अगर मैं आज़ाद होता तो निश्चय ही महारानी की सेवा करना अपना सौभाग्य समझता।"

महारानी ने मेरे मालिक से बातचीत की। उससे कहा गया कि वह मुझे बेच दे। उसे तो पहले से ही डर था कि मैं एक महीने से ज्यादा ज़िन्दा नहीं रहूंगा। वह बहुत आसानी से मुझे बेचने के लिए राज़ी हो गया। उसने एक हज़ार सोने की मोहरें मेरे बदले में मांगीं।

महारानी ने फ़ौरन अपने मंत्री को मोहरें पेश करने के लिए कहा। मोहरें मेरे सामने ही गिनी गईं। एक-एक मोहर हमारी किसी गाड़ी के पहिए के बराबर थी। जब महारानी ने मुझे खरीद लिया तो हाथ जोड़कर मैंने उससे कहा, "अब मैं आपका गुलाम हूं। लेकिन मेरे पुराने मालिक की लड़की हमेशा से मेरी देख-रेख करती आई है। वह मेरा बहुत ख्याल रखती है। उसे भी नौकर रख लिया जाए। उसके साथ रहने पर मुझे किसी बात की दिक्कत नहीं होगी।"

महारानी ने मेरी बात मान ली। मेरा पुराना मालिक भी इसके लिए फौरन राज़ी हो गया। भला राजदरबार की नौकरी कौन नहीं पसन्द करता! मेरा पुराना मालिक मुझे और अपनी लड़की को रानी की सेवा में छोड़कर अपने घर लौट आया। जब जाने लगा तब वह मेरी पीठ थपथपाता गया, लेकिन मैंने बिना कुछ कहे बहुत ठण्डे मन से उसे सलाम किया।

जब वह चला गया तो रानी ने मुझसे पूछा, "तुमने इस तरह ठंडे मन से अपने मालिक को क्यों विदा किया? इतने दिन उसके साथ रहने के बाद उससे अलग होने पर तुम्हें कुछ अफसोस होना चाहिए था।"

मैंने महारानी से कहा, "यह आदमी ज़रूरत से ज़्यादा मेरा लाभ उठा चुका है। इसने सिर्फ इतनी कृपा मुझपर की कि जब मैं पहली बार इसे मिला तो इसने ज़मीन पर पटककर मेरा सिर नहीं फोड़ा। इस कृपा के बदले में इतने दिनों से इसके लिए तमाशा दिखाता रहा हूं और रुपया कमाता रहा हूं।" यह सारी बात मैंने बड़ी बुद्धिमानी से, लेकिन बहुत सकुचाते हुए महारानी को बताई थी।

उसने मेरे साथ हमदर्दी प्रकट की। उसे यह देखकर आश्चर्य हो रहा था कि इतना छोटा-सा जन्तु इतनी बुद्धिमानी से बात कर सकता है। यह मुझे राजा को दिखाने के लिए उसके कमरे

में ले गई। राजा उस समय अपने कमरे में बैठा कोई काम कर रहा था। महारानी ने अपनी हथेली उसके सामने कर दी। लेकिन राजा ने शायद ध्यान से मुझे नहीं देखा। वह महारानी को फटकारते हुए कहने लगा, "तुम छोटे-छोटे जीव-जन्तुओं से कब से खेलने लगीं ?"

लेकिन जब राजा ने मुझे बोलते सुना और उसे लगा कि मैं बहुत बुद्धिमानी से बात कर सकता हूं तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। इतने छोटे-से प्राणी को इस तरह कायदे से पेश आते देखकर उसने महारानी से कहा, "इसकी खूब हिफाजत होनी चाहिए और इसके आराम का पूरा इन्तज़ाम होना चाहिए।"

महारानी ने अपने खास बढ़ई को बुलवाया और मेरे लिए एक डिब्बा तैयार करने का हुक्म दिया। वह डिब्बा मेरे लिए सोने का कमरा भी हो सकता था। इसलिए मैंने खुद बढ़ई को बहुत-सी आवश्यक बातें बताई। करीब तीन हफ्ते बाद वह मेरे लिए लकड़ी का एक छोटा-सा कमरा बना लाया। यह सोलह फुट लम्बा, सोलह फुट चौड़ा और बारह फुट ऊंचा था। इसमें दो खिड़कियां थीं। एक दरवाज़ा और दो अलमारियां भी थीं। इसकी छत ऊपर से उठाई जा सकती थी। मेरी मित्र, जिसे मैं अब 'ग्लम' नाम से पुकारने लगा था, रोज़ रात को इस ढक्कननुमा छत को ऊपर से रखकर उसमें ताला लगा देती थी। अन्दर मेरे सोने के लिए उसने एक छोटा-सा बिस्तर बना दिया था।

फिर रानी ने अपने एक पुराने कारीगर को बुलाया जो छोटी चीजें तैयार करने में बहुत होशियार था। वह मेरे लिए हाथी-दांत जैसी किसी चीज़ की दो कुर्सियां और दो टेबलें तथा एक अलमारी तैयार करने लगा। इस पूरे डिब्बे में, जो मेरा कमरा था, फर्श और दीवारों पर ही नहीं बल्कि छत में भी मुलायम गद्दे लगवा दिए गए ताकि जब कोई मुझे उठाकर चले तो मुझे किसी तरह की चोट न लगे।

अपने दरवाज़े में लगाने के लिए मैंने एक ताले की भी मांग की। फौरन एक सुनार बुलाया गया, क्योंकि इतना छोटा-सा ताला उस राज्य में कोई लुहार नहीं बना सकता था। सुनार ने बहुत मेहनत करके ऐसा ताला बनाया जैसा आज तक उनके राज्य में नहीं बना था। यह ताला हालांकि उनके लिए बहुत छोटा था, लेकिन हमारे देश के बड़े से बड़े ताले से भी बड़ा था। इस ताले की चाभी मैं अपने पास ही रखता था।

महारानी मुझसे इतनी खुश थी कि मेरे बिना खाना नहीं खाती थी। उसकी खाने की मेज़ पर मेरे लिए एक नन्हीं-सी मेज़ लगा दी जाती थी। ग्लम मेरे ही पास एक तिपाई पर खड़ी रहती थी और मेरा खयाल रखती थी। मेरे लिए चांदी के छोटे-छोटे बर्तन तैयार किए गए, जो महारानी के खाने के बर्तनों की तुलना में उतने ही छोटे लगते थे जितने कि हमारे यहां की किसी खिलौने की दुकान में रखे हुए छोटे-छोटे बर्तन। मेरे इन बर्तनों को ग्लम अपनी जेब में रखती थी। वह हमेशा अपने हाथ से उन्हें साफ करती और बहुत संभालकर रखती थी।

महारानी के साथ उसकी राजकुमारी और राजकुमार भी खाना खाया करते थे। इनमें से बड़ा राजकुमार सोलह साल का और छोटा तेरह साल का था। महारानी मेरी तश्तरी में रोटी का एक बड़ा-सा कौर रख देती थी, जिसे मैं अपने मन के मुताबिक तोड़-तोड़कर खाता था। महारानी की खुराक बहुत अधिक थी। इन दिनों उसकी पाचन-शक्ति कुछ खराब थी। लेकिन फिर भी वह इतना खाना खाती थी कि देखकर आश्चर्य होता था। उसका एक कौर इतना बड़ा होता था कि उसमें हमारे देश के एक दर्जन हट्टे-कट्टे किसान अपना पेट भर सकते थे।

वह एक सुनहरे कप में शराब पीती थी, जो मेरे लिए एक बड़ी नांद के बराबर था। उसके छुरी-कांटे दो-दो गज़ लम्बे थे। चम्मच तो और भी बड़े-बड़े थे। मुझे इन चीज़ों को देखकर डर लगता था। महारानी जिस चाकू से अपनी रोटी काटती थी

उससे हमारे यहां की एक मोटी ताज़ी भैंस को काटा जा सकता था। उसका चम्मच उठाने में मेरे जैसे चार आदमियों को भी पसीना छूट आता। ग्लम मुझे राजमहल में घुमाती रहती थी। वहां की कई चीज़ें देखकर मैं चकित रह गया, जैसे, शराब की बोतलें एक-एक हौज़ के बराबर थीं! राजा के लिखने की दवात में एक दिन मैंने झांका तो मेरे मुंह से चीख निकल गई। वह एक बड़े भारी कुएं की तरह थी।

महल में काफी दिनों तक रहने और वहां के लोगों की बातचीत सुनते रहने के कारण अब मैंने लोगों के रीति-रिवाज भी सीख लिए थे। किस मौके पर किस तरह व्यवहार करना चाहिए, किसके साथ किस तरह पेश आना चाहिए, यह सब मैं सीख गया था। इतने बड़े राज्य के इतने बड़े राजा के घर में रहने से मुझे रहन-सहन के सारे शाही ढंग मालूम हो गए। इसका नतीजा यह हुआ कि धीरे-धीरे मैंने राजमहल के हर आदमी का मन जीत लिया। यहां तक कि राजा भी अब मेरा सम्मान करने लगा। वह मुझसे इस तरह मिलता था, जैसे किसी सम्मानित अतिथि से मिल रहा हो।

कभी-कभी महारानी अपनी हथेली में मुझे लेकर आईने के सामने खड़ी हो जाती। इस समय मुझे बड़ी हंसी आती। आईने में हम दोनों की शक्लें देखने के काबिल होती थीं। दोनों में कोई तुलना नहीं थी; जैसे एक बहुत बड़ी चट्टान हो और दूसरा एक छोटा-सा कंकड़!

राजमहल में मैं सिर्फ एक ही आदमी से परेशान था, वह था महारानी का एक बौना नौकर। वह मसखरे का काम करता था। वह उस राज्य का सबसे बौना आदमी माना जाता था। और इसका उसे अभिमान था। लेकिन उसकी लम्बाई भी करीब बीस फुट थी। जब उसने मेरे जैसे छोटे आदमी को देखा तो वह अपने को लम्बा आदमी मानने लगा। जब भी कभी मेरे पास से गुज़रता तो इतना छोटा होने के कारण मेरा मज़ाक बनाए बिना उसे

चैन न मिलती।

मेरे सामने वह खूब अकड़कर चलता था। जब भी मैं दरबार में आनेवाले राजा-नवाबों और संभ्रांत महिलाओं से बातें करता होता तो वह भी खड़ा होता और मुझे चिढ़ाने की कोशिश करता। कभी-कभी मुझे उसकी हरकत पर इतना गुस्सा आ जाता कि मैं उसे लड़ने के लिए चुनौती देने लगता। इसपर वह और भी हंसता और मेरा मज़ाक बनाता हुआ वहां से चला जाता। सचमुच उसने मुझे तंग कर रखा था।

एक दिन खाना खाने के समय यह बौना मसखरा न मालूम किस बात पर मुझसे बहुत नाराज़ हो गया। अचानक लपककर वह एक कुर्सी पर चढ़ गया। फिर उसने मुझे उठाकर एक दूध के प्याले में सिर के बल डाल दिया। इस तरह मुझे दूध में डुबाकर वह वहां से भाग गया। उस समय खाने के टेबल पर कोई आया नहीं था। अगर मैं तैरना नहीं जानता होता तो उस दूध के प्याले में डूब मरा होता। तब तक ग्लम ने मुझे देख लिया। वह फौरन दौड़ी आई। उसने प्याले से निकालकर मुझे किसी तरह बचाया।

इस घटना से मैं बहुत घबरा गया। तैरते-तैरते काफी दूध भी मैं पी गया। मेरी अच्छी-सी पोशाक खराब हो गई। इसके अलावा मेरा कोई खास नुकसान नहीं हुआ। लेकिन उस बदमाश को अच्छी सज़ा मिली। उसे कोड़ों से पीटा गया। उसे वह दूध भी पीना पड़ा, जिसमें उसने मुझे डुबाने की कोशिश की थी। इसके अलावा महारानी की नज़रों में भी वह गिर गया।

महारानी अक्सर मेरे इस तरह बार-बार घबराने और डर जाने का मज़ाक बनाती रहती थी। वह कहती, "क्या सचमुच तुम्हारे देश के लोग इतने कायर होते हैं?" मुझे बड़ी शर्म आती। मैं उससे बहस भी नहीं कर सकता था कि ऐसे दैत्यों के देश में मेरे जैसा आदमी बहादुरी कैसे दिखा सकता है।

एक बार की बात है, गर्मी के दिनों में राज्य में मक्खियां बहुत

बढ़ गई। इन मक्खियों का आकार हमारे यहां के कौओं के बराबर था। जब भी मैं खाने बैठता था तो इनसे बहुत परेशान रहता। ये मेरे कानों के आसपास पंख फड़फड़ाती रहती थीं और कभी-कभी मेरे सिर और कन्धे पर आ बैठती थीं। इनके पंजे चिपचिपे होते थे और उनसे बड़ी बदबू आती थी। इसलिए जब भी कोई मक्खी मेरा पीछा करती तो मैं जान छुड़ाकर भागता था। मुझे इस तरह मक्खियों से डरते देखकर वे लोग बड़े खुश होते थे।

वह बौना अक्सर एक झपट्टे में बहुत-सी मक्खियों को पकड़ लेता था और उन्हें मेरी नाक के पास लाकर छोड़ देता था। मैं चीखकर भागता और महारानी खिलखिलाकर हंस पड़ती। लेकिन मैं भी अपनी तलवार निकाल लेता और उनमें से कई को मार गिराता था। मेरे इस करतब की वे लोग बड़ी प्रशंसा करते थे। क्योंकि मेरा निशाना बड़ा सधा होता था और एक ही बार में मैं उनके दो टुकड़े कर देता था।

4

इन दैत्याकार लोगों के देश में रहते हुए मुझे लगभग दो साल हो गए थे। तीसरे साल के शुरू में राजा और रानी अपने राज्य के दक्षिणी हिस्से का दौरा करने निकले। वे मुझे और ग्लम को भी अपने साथ लेते गए। मुझे उसी डिब्बे में ले जाया गया। यह काफी आरामदेह था। इस सफर में मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई।

यात्रा के अन्त में हम लोग समुद्र के किनारे पहुंचे। वहां बादशाह का अपना एक महल था। यह सागर-तट से लगभग 18 मील दूर था। वहां पहुंचते-पहुंचते मैं बहुत थक गया था, ग्लम भी थक गई थी। हम दोनों की तबियत भी ठीक नहीं थी। मुझे हल्का-सा जुकाम था। लेकिन ग्लम तो बेचारी बिस्तर पर ही पड़ गई थी। मैं समुद्र तक जाना चाहता था, क्योंकि अगर कभी भागने का मौका मिलता तो वही मेरा एकमात्र रास्ता हो सकता था।

इसलिए मैंने ऐसा बहाना बनाना शुरू किया कि मेरी तबियत बहुत ही खराब है। मैंने समुद्र-किनारे की हवा खाने की इच्छा प्रकट की। एक नौकर जो कभी-कभी मेरा और ग्लम का का[illegible] किया करता था, मुझे घुमाने के लिए मिला। जब ग्लम ने [illegible] सुना तो वह बहुत घबराई! उसने नौकर को काफी हिदायतें दीं और कहा, "इसे खूब होशियारी से घुमाना, ताकि यह कहीं खाई-खंदक में न गिर पड़े! या हवा में न उड़ जाए!" मु[illegible]

कि[illegible] करते समय उसकी आंखों में आंसू आ गए जैसे उसे यह म[illegible]न हो गया हो कि आगे क्या होने वाला है।

वह लड़का मुझे डिब्बे में लेकर समुद्र की ओर चला। समुद्र-किनारे की चट्टान के पास पहुंचकर उसने मेरा डिब्बा एक ऊंची-[illegible] चट्टान पर रख दिया। मैंने अपनी खिड़की खोलकर ललचाई [illegible]ई आंखों से समुद्र की ओर देखा। काफी देर तक मैं अपने आस-[illegible]स की स्थिति देखता रहा। अन्त में मैंने उस लड़के से कहा कि [illegible]री तबियत अचानक कुछ खराब हो गई है, इसलिए मैं यहीं [illegible]ने डिब्बे में आराम करता हूं। लड़के ने खिड़की बंद कर दी। [illegible] अपने बिस्तर पर सो गया। थोड़ी ही देर में मुझे नींद आ गई।

मुझे सोया हुआ देखकर वह लड़का मेरा डिब्बा वहीं छोड़कर [illegible]धर-उधर खेलने लगा। मैं न मालूम कब तक सोता रहा। [illegible]चानक एक बहुत ज़ोर का झटका लगा और मेरी नींद खुल [illegible]ई। मेरे डिब्बे की छत पर एक गोल कड़ी लगी हुई थी। यात्रा [illegible] समय इसीमें रस्सी बांधकर मेरा डिब्बा उठाया जाता था।

अचानक मैंने सुना कि कोई उस कड़ी को खड़खड़ा रहा है। [illegible]खते ही देखते किसीने मेरे डिब्बे को ऊपर उठाया और फिर [illegible]ज़ी से आसमान की ओर ले चला। पहला झटका तो काफी [illegible]ज़ था, लेकिन उसके बाद मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई। डिब्बा [illegible]सानी से हवा में तैरता रहा। अन्दर से मैं खूब ज़ोर-ज़ोर से [illegible]स लड़के को आवाज़ देता रहा, लेकिन शायद किसीने मेरी [illegible]वाज़ नहीं सुनी।

मैंने खिड़की में से देखा तो आसमान और बादलों के अलावा [illegible]र कुछ दिखाई ही नहीं दिया। फिर मैंने अपने सिर पर पंखों [illegible] कुछ फड़फड़ाहट सुनी। मेरा दिल बैठ गया। अब मैं समझ [illegible]या कि मुझपर कौन-सी मुसीबत आई है। शायद कोई बाज़ मेरे [illegible]ब्बे की कड़ी को अपनी चोंच में दबाए उड़ा जा रहा था। वह [illegible]ायद किसी चट्टान पर पटककर मेरे डिब्बे को तोड़ना चाहता [illegible], ताकि आसानी से मुझे खा सके। मेरा दिल ज़ोरों से धड़कने

लगा।

कुछ देर तक इसी तरह हवा में उड़ने के बाद अचानक [illegible] मेरे डिब्बे को छोड़ दिया। मैं तेज़ी से नीचे आने लगा और छपाक बड़े ज़ोर से मेरा डिब्बा पानी पर गिरा और अन्दर घुस गय[illegible] मेरे चारों तरफ अंधेरा हो गया। लेकिन फिर दूसरे ही क्षण [illegible] ऊपर उठ आया और मैंने अपनी खिड़की में प्रकाश देखा। डिब्बा वैसे तो लकड़ी का बना था, लेकिन उसमें बहुत-सा साम[illegible] था। मज़बूती के लिए उसमें चारों तरफ पट्टियां और सला[illegible] लगी थीं। इसके अलावा मेरा भी वज़न था। इसलिए मेरा डिब्[illegible] पानी में करीब पांच फुट डूबकर तैर रहा था।

जब बाज़ मुझे हवा में लेकर उड़ रहा था, उसी समय शाय[illegible] दो-तीन दूसरे बाज़ों ने भी उसका पीछा किया होगा और उ[illegible] छीना-झपटी में मेरा डिब्बा उसकी चोंच से छूट गया होग[illegible] डिब्बे के नीचे जो लोहे की चद्दरें लगीं थीं, उनकी वजह से मे[illegible]

...ा इतनी ऊंचाई से पानी पर गिरने पर भी टूट नहीं सका। ... अलावा डिब्बे का दरवाज़ा ऊपर-नीचे खुलता था, इसलिए ...दर पानी भी बहुत कम आया।

...किसी तरह कोशिश करके मैं अपने डिब्बे की छत पर पहुंचा। ...रों तरफ पानी ही पानी था। बहुत तेज़ हवा चल रही थी ... मेरा डिब्बा ऊंचो-नीची लहरों पर थपेड़े खा रहा था। छत ... कहीं खड़े रहने की जगह नहीं थी, इसलिए मैं फिर से दर-...ज़ा बन्द करके अन्दर लौट आया।

अब मैंने अपने को भाग्य के सहारे छोड़ दिया। पता नहीं ...ब मेरा क्या होगा। मुझे बार-बार अपने बाल-बच्चों की याद ...ती थी। मैं उस छोटी-सी सहेली ग्लम को भी नहीं भूल पाता ... जो मुझे इतना प्यार करती थी और हमेशा आराम देने की ...शिश करती थी। न मालूम कब तक मैं इसी तरह निराशा से ...ाता हुआ अन्दर पड़ा रहा।

कुछ देर बाद मुझे लगा कि मेरे डिब्बे के एक कोने में कुछ ...वाज़ हो रही है। फिर थोड़ी ही देर बाद मैंने अनुभव किया ... मेरा डिब्बा समुद्र पर खींचा जा रहा है। खिड़कियों से मुझे ...र्फ लहरों के उठने और डिब्बे की दीवारों से पानी के टकराने ...अलावा और कुछ दिखाई नहीं दे पाता था। डिब्बा अब बड़ी ...ज़ी से एक दिशा में खिचा चला जा रहा था। कभी-कभी डिब्बा ...िलकुल पानी में चला जाता था और चारों तरफ अंधेरा हो ...ाता था। लेकिन अब मुझे कुछ-कुछ आशा होने लगी थी कि ...ल्द ही इस मुसीबत से मुझे छुटकारा मिल जाएगा।

किसी तरह कोशिश करके मैं अपना मुंह खिड़की तक ले गया ...और ज़ोरों से चिल्लाने लगा। मैं जितनी भी भाषाएं जानता था, सबमें मदद के लिए आवाज़ लगाने लगा।

फिर मैंने एक लकड़ी में अपना रूमाल बांध दिया और उसे खिड़की से बाहर निकालकर हिलाना शुरू किया। मैंने सोचा कि शायद आसपास कोई जहाज़ या नाव हो और कोई मेरी मदद के

लिए पास आ जाए। मैं रूमाल हिलाता और चिल्लाता रहा ... लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। सिर्फ मेरा डिब्बा एक दि... में खिचता रहा।

अचानक मेरा डिब्बा ज़ोर से किसी चीज़ से टकराया। मु... लगा कि शायद किसी चट्टान से टकरा गया है। लेकिन फिर मैं... अपनी छत पर किसी रस्सी की खरखराहट सुनी। ऐसा लगा ... डिब्बे को फंसाने के लिए फंदा फेंका जा रहा हो। काफी देर त... डिब्बा उठता-गिरता रहा। अन्त में मैंने फिर से खिड़की में मुंह लगाकर मदद के लिए चिल्लाना शुरू किया। मैं अपना रूमा... भी बराबर हिला रहा था, लेकिन इस बार मुझे अपनी चीखों क... जवाब मिला। कुछ लोग मेरे जवाब में आवाज़ देने लगे ... मेरी खुशी की सीमा न रही। उनकी आवाज से ऐसा लगत... था कि वे सब मेरे जैसे ही मनुष्य हैं।

अचानक मैंने अपने डिब्बे की छत पर किसीके पैरों ... आहट सुनी। फिर किसीने एक छेद में मुंह डालकर अंग्रेज़... भाषा में आवाज़ दी। मैंने फौरन उसे जवाब दिया और थोड़े... से शब्दों में उसे बताया कि मैं बड़ी मुसीबत में फंसा हूं। इस... डिब्बे में मुझे कैद कर दिया गया है और मैं बाहर निकलना... चाहता हूं।

जवाब में उस आदमी ने मुझे बताया कि अब डरने की ज़रूरत नहीं है। मेरा डिब्बा उनके जहाज़ से बंधा हुआ है। जहाज़ का बढ़ई आकर डिब्बे में छेद करेगा और मुझे बाहर निकाल देगा।

इसपर मैंने कहा, "इससे कोई फायदा नहीं होगा। आप लोगों में से कोई मेरे डिब्बे को अपनी उंगली में उठाकर जहाज़ पर ले लीजिए और अपने कप्तान के कमरे में ले चलिए।"

इसपर वे लोग ज़ोरों से खिलखिलाकर हंस पड़े। उन्हें लगा कि मैं पागल हो गया हूं। सचमुच अब तक मैं यह नहीं समझ पाया था कि मुझे बचानेवाले मेरे देश के निवासी और मेरे ही

जैसे इन्सान थे। मैं उन्हें दैत्यों के देश का आदमी माने बैठा था।

थोड़ी देर बाद एक बढ़ई आया। उसने आरी से काटकर डिब्बे की छत में फिर छेद किया। छेद में से एक सीढ़ी नीचे लटकाई गई। सीढ़ी से चढ़कर मैं ऊपर आया। अब तक मैं बहुत कमजोर हो चुका था। मुझे उठाकर वे लोग जहाज पर ले गए।

जहाज के सभी मल्लाह मुझे घेरकर खड़े हो गए। वे हजारों तरह के सवाल पूछने लगे। लेकिन उस समय उनका जवाब देने की मुझमें शक्ति नहीं थी। मैं शान्ति चाहता था। जहाज के कप्तान ने मेरी स्थिति समझ ली। उसने देखा कि मैं खड़े-खड़े थोड़ी ही देर में बेहोश हो जाऊंगा। इसलिए वह मुझे सहारा देकर अपने कमरे में ले गया। वहां ले जाकर उसने मुझे थोड़ी-सी शराब पिलाई और फिर अपने बिस्तर पर आराम करने को कहा। मैं फौरन उसके बिस्तर पर जा गिरा और थोड़ी ही देर में सो गया।

जब मेरी नींद खुली तो मैंने देखा कि अब मेरी तबियत काफी अच्छी है। मुझे बिस्तर से उठते देखकर कप्तान फौरन मेरे पास आया। उस समय रात के आठ बजे थे। उसने खाना लाने का हुक्म दिया। सचमुच मुझे बहुत भूख लगी हुई थी। खाना देखकर मैं फौरन उसपर टूट पड़ा। बरसों बाद पहली बार मुझे अपने देश का खाना मिला था। कुछ देर तक मैं चुपचाप खाता रहा।

अन्त में जब मैं खा-पी चुका तो कप्तान मुझसे सवाल पूछने लगा। पहले तो समझ में नहीं आया कि मैं क्या कह रहा हूं। उसने सोचा कि अभी तक मेरा दिमाग ठीक नहीं हुआ है। वह बार-बार पूछने लगा कि इस डिब्बे में आखिर मैं कैसे बन्द हुआ और समुद्र में कैसे आ गिरा ?

अन्त में मैंने शुरू से उसे सारी बातें कह सुनाईं। उसे मेरी कहानी बड़ी विचित्र लगी। उसे यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हो रहा

था कि मैं किस तरह ऐसे दैत्यों के बीच ज़िन्दा रह सका।

3 जून, 1706 को हमारा जहाज इंगलिस्तान के किनारे लगा। इस तरह दैत्यों के देश से भागने के नौ महीने बाद मैं अपने घर पहुंचा। मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि उसने मुझे सही-सलामत अपने बाल-बच्चों के बीच लौटा दिया। मेरे घर के लोग मुझसे मिलकर कितने खुश हुए होंगे, इसका आसानी से अन्दाज लगाया जा सकता है। मैंने कसम खाई कि अब आगे कभी भी लम्बी यात्रा के लिए नहीं जाऊंगा।

लेकिन जो यात्राएं मैं कर चुका हूं, उनकी याद मुझे कभी नहीं भूलेगी। इन यात्राओं में मुझे काफी तकलीफ हुई, लेकिन मेरा अनुभव भी खूब बढ़ा। मुझे अच्छे लोग भी मिले और बुरे लोग भी। अजीब-अजीब देश और अजीब-अजीब लोग मैंने देखे, जिन्हें मैं घर बैठे कभी नहीं देख सकता था और न उनके बारे में कभी यह कहानी लिख सकता था।

•••

मुद्रक : शिक्षा भारती प्रेस, शाहदरा, दिल्ली

315380